हिन्दी-व्याकरण

ELEMENTS OF HINDI GRAMMAR

PRESCRIBED BY THE
DIRECTOR OF PUBLIC INSTRUCTION, U. P.

FOR THE USE OF
THIRD & FOURTH CLASSES

OF
VERNACULAR & ANGLO-VERNACULAR SCHOOLS
FOR BOYS & GIRLS.

BY

GANGA PRASAD, M. A., C. T.
Head Master, D. A.-V. High School, Allahabad

ALLAHABAD
RAI SAHIB RAM DAYAL AGARWALA
Educational and Law Publisher

1931

Price 3 as

PREFACE

This little treatise on Hindi Grammar treats o
simple parts of speech, their classification, ordinar
inflections, parts of a sentence and important rules o
orthography and syntax only. We propose to giv
here only as much as is needed for, or is possible to be
taught in primary classes of Vernacular and Anglo
Vernacular Schools neither more nor less. Technica
terms are those recommended by the Nagri Pracharin
Sabha, Benares and more or less unanimously accep-
ted by literary men of Hindi Language. We hav
intentionally avoided logical definitions as they ar
not only of no value at this stage, but sometime
a hindrance in grasping the idea. In the matter o
arrangement too we have been guided by the sole consi-
deration of helping the teacher and his very youn
pupils and everything that might confuse them ha
been [illegible] illustrations used are [illegible]
[illegible] been supplemented [illegible]
[illegible]

विषयों की सूची

हिन्दी व्याकरण

प्रथम भाग

—:०:—

पाठ १

संज्ञा

राम आता है।
कृष्ण जाता है।
सीता खाती है।
चन्द्र हँसता है।

यहाँ 'राम' किसी आदमी का नाम है।
'कृष्ण' किसी आदमी का नाम है।
'सीता' किसी औरत का नाम है।
'चन्द्र' किसी लड़के का नाम है।

बिल्ली आई।
कबूतर उड़ रहा है।
उसने चूहे को पकड़ लिया।

यहाँ 'बिल्ली' एक जानवर का नाम है ।
'कबूतर' एक जानवर का नाम है ।
'चूहा' एक जानवर का नाम है ।

इसी तरह मोहन, गोपाल, तोता, गाय, आदि जानवर के नाम हैं ।

आगरा एक बड़ा नगर है ।
वह इस मकान में रहता है ।
इस कमरे में मत बैठो ।

यहाँ 'आगरा' एक जगह का नाम है ।
'मकान' एक जगह का नाम है ।
'कमरा' एक जगह का नाम है ।

इसी तरह खेत, शफ़ाख़ाना, मदर्सा, शहर । जगह के नाम हैं ।

वह चौकी पर बैठा है ।
यह किसका चाकू है ?
दवात में स्याही है ।

यहाँ 'चौकी' एक चीज़ का नाम है ।

'चाक़ू' एक चीज़ का नाम है।
'दवात' एक चीज़ का नाम है।
'स्याही' एक चीज़ का नाम है।

इसी तरह रोटी, पानी, चाँद, पङ्खा वग़ैरह किसी चीज़ के नाम हैं।

याद रक्खो कि

किसी (आदमी, चीज़ या जगह) के नाम को संज्ञा कहते हैं।

अभ्यास १

१—नीचे लिखे वाक्यों में संज्ञा बताओ :—

१—कुत्ता भौंकता है।
२—चिड़िया उड़ती है।
३—यशोदा अच्छी लड़की है।
४—यह लड़का शरीर है।
५—हमारे गाँव के पास एक पेड़ है।
६—रुपये लाओ।
७—वह दाले खा रहा है।
८—इस खेत में धान बोया गया है।
९—वह हल चला रहा है।
१०—उसका मकान गिर पड़ा।

११—यह कलकत्ते में रहता है।
१२—क्या तुम कभी रेल पर बैठे हो?
१३—हवा चल रही है।
१४—धोती मत धोओ।
१५—यह दूध पी रहा है।
१६—शहद की मक्खी बड़ी मेहनत करती है।

२—अपने मदर्से की चार चीज़ों के नाम लो।

३—तुमने बाग़ में जो चीज़ें देखी हों उन नाम बताओ।

पाठ २

क्रिया

राम आता है।
कबूतर उड़ रहा है।
इस कमरे में मत बैठो।
वह चौकी पर बैठा है।
उसने चूहे को पकड़ लिया।

यहाँ 'आता है' कहने से किसी काम का कर पाया जाता है।

'उड़ रहा है' कहने से किसी काम का करना पा जाना है।

'बैठो' कहने से किसी काम का करना पाया जाता है।

'बैठा है' कहने से एक काम का करना पाया जाता है।

'पकड़ लिया' कहने से एक काम का करना पाया जाता है।

इसलिये इन शब्दों को क्रिया कहते हैं।

याद रक्खो कि

क्रिया वह शब्द है जिससे किसी काम का करना या होना पाया जाय।

अभ्यास २

१—पाठ १ में लिखे हुए सवाल नं० १ के वाक्यों को फिर पढ़ो और बताओ कि उनमें कौन कौन शब्द क्रिया हैं।

२—नीचे के वाक्यों में क्रिया शब्द अपनी ओर से जोड़ो:—

१—कल————
२—बिल्ली चूहे को————
३—तुम्हारी किताब————
४—मैंने तुम को एक कलम————
५—सूरज————
६—इन आँखों से बहुत से दरख्त————

७—बादल———— और पानी————
८—धोबी से कपड़े अच्छे नहीं————
९—बनिया आटा————
१०—किसान ने बीज————
११—तुम सवेरे क्यों नहीं————
१२—इस चाकू से क़लम————
१३—यह सवाल————
१४—उसकी माँ रोटी————

पाठ ३

विशेषण

गाय।	सफ़ेद गाय।
लड़का।	बुरा लड़का।
काग़ज़।	पीला काग़ज़।
कम्बल।	काला कम्बल।

दोनों ओर की पंक्तियों को पढ़ो और बताओ कि इनमें क्या फ़र्क है।

'सफ़ेद' शब्द से मालूम होता है कि गाय कैसी है। यहाँ 'सफ़ेद' शब्द 'गाय' की तारीफ़ करता है। शब्द 'बुरा' से मालूम होता है कि लड़का कैसा है। यहाँ 'बुरा' शब्द 'लड़के' की तारीफ़ करता है।

तारीफ़ करने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं। इसलिये 'सफ़ेद' और 'बुरा' विशेषण हैं।

इसी तरह 'पीला' और 'काला' भी विशेषण हैं।

विशेषण जिस संज्ञा की तारीफ़ करते हैं उसे विशेष्य कहते हैं। इसलिये 'गाय', 'लड़का', 'कागज़' और 'कम्बल' विशेष्य हैं।

याद रक्खो कि

विशेषण वह शब्द है, जो किसी संज्ञा की तारीफ़ करे

अभ्यास ३

१—नीचे दिये हुए वाक्यों में विशेषण और विशेष्य बताओ :—

१—उसका कुत्ता काला है।
२—रुपया सफ़ेद होता है।
३—छोटी रोटी मुझे दे दो।
४—यह मकान बहुत बड़ा है।
५—उसने बुरा काम किया।
६—चोर लोग कठिन काम से नहीं भागते।
७—शराबी आदमी के पास मत बैठो।
८—यह ऊँचा मकान किसी धनी पुरुष का है।
९—एक बूढ़े आदमी के पास मोटी लकड़ी है।
१०—हरी हरी घास को गाएँ पसन्द करती हैं
११—ठण्डी हवा शरीर को मज़बूत करती है
१२—गोल दरवाज़े के पास लम्बा आदमी खड़ा है

२—नीचे लिखी संज्ञाओं के साथ अपनी ओर से विशेषण लगाओ—कलम, चाकू, कपड़ा, पेड़, नदी, तालाब, खेत, शेर, भैंस, हाथ, सोना, पत्थर, गली, शहर, पत्ता, पैर, हवा, आग, पानी और दूध।

३—नीचे लिखे विशेषणों के साथ विशेष्य लगाओः—काला, पीला, मोटा, पतला, अच्छा, बुरा, छोटी, बड़ी, भारी, हलका, टेढ़ा, नया, पुराना, झूठे, सच्चे, ईमानदार, बेईमान, कमीना, ताज़ा और साफ़।

पाठ ४

सर्वनाम

गोपाल ने कहा कि **मैं** जाऊँगा।
सीता **अपने** घर चली गई।
लड़की से **उसकी** कलम माँग लो।
मैंने भाई से पूछा "**तुम्हारे** हाथ में क्या है?"

पहले वाक्य में 'मैं' गोपाल के लिये आया है। कौन जावेगा?—गोपाल। अगर गोपाल की जगह 'मैं' न लावें तो वाक्य इस प्रकार होगा :—

"गोपाल ने कहा कि **गोपाल** जायगा।"

यह वाक्य अच्छा नहीं मालूम होता और न कोई कहता है। इसलिये दूसरी बार 'गोपाल' की जगह पर 'मैं' शब्द का इस्तेमाल हुआ है।

इसी तरह दूसरे वाक्य में 'अपने' सीता की जगह पर आया है। "सीता सीता के घर चली गई" कहना ठीक नहीं है।

'गोपाल' और 'सीता' संज्ञा हैं। इसलिये 'मैं' और 'अपने' संज्ञा की जगह पर इस्तेमाल हुए हैं।

तीसरे वाक्य में बताओ कि 'उसकी' किस संज्ञा की जगह पर आया है।

चौथे वाक्य में शब्द 'तुम्हारे' किस संज्ञा की जगह पर आया है ?

याद रक्खो कि

जो शब्द किसी संज्ञा की जगह पर आते हैं उनको **सर्वनाम** कहते हैं।

ऊपर के वाक्यों में 'मैं', 'अपने', 'उसकी' और 'तुम्हारे' सर्वनाम हैं।

अभ्यास ४

१—नीचे के वाक्यों में **सर्वनाम** बताओ और यह भी बताओ कि वह किन किन संज्ञा की जगह पर आये हैं:—

१—लड़की ने बिहारी से पूछा, "तुम्हारा क्या नाम
२—राम ने रावण से कहा, "मैं तुम को मारूँगा।"
३—चंद्रा अपनी गुड़ियों से खेल रही है।
४—आप अपनी किताब लाइये।
५—गाय अपने बच्चे को दूध पिलाती है।
६—हरि ने मोहन से कहा, "मैं तुम्हारे घर कल आऊँग
७—बल्लू की बहिन उसके लिये मिठाई लाई है।
८—यह मूर्ख है।

२—नीचे के वाक्यों में सर्वनाम जोड़ो:—

१—गंगू———बाप के पास गया।
२—सोहन ने लछमण से कहा, "———यहाँ मत बैठ
३—कुत्ते ने————पूँछ हिलाई।
४————भाई————बुला रहा है।
५————कुत्ते के गोली मारी और————मर ग
६—माताप्रसाद बड़ा मेहनती है। इसलिये———
होगा।
७—लड़कों को चाहिये कि———उस्ताद का कहना म
८—रहीम और लतीफ़————गेंद से खेल रहे हैं।
९—लड़के ने पीपे में ठोकर मारी और———तेल
दिया।
१०—ज़मीन———कीली पर २४ घण्टे में घूमती है।

३—नीचे के, वाक्यों में संज्ञा की जगह सर्वनाम लगाओ :—

१—मोहन मोहन की गेंद से खेल रहा है।

२—जमुना ने अपने भाई से पूछा, "भाई कहाँ जाता है ?"
३—चमेली ने चमेली की माँ से कहा, "चमेली भूखी है।"
४—कुत्ते ने कुत्ते की पूँछ हिलाई।
५—कैलाश कैलाश की किताब पढ़ता है।

पाठ ५

क्रिया विशेषण

(१) वह इधर उधर घूमता है।
नट ऊपर चढ़ गया।
तुम कहाँ जाते हो ?
हम वहाँ न जायँगे।
स्याही नीचे गिर पड़ी।

पहले वाक्य में 'इधर उधर' शब्द से 'घूमने' की जगह मालूम होती है। यानी 'कहाँ घूमता है ?'—इधर उधर।

इसी तरह दूसरे वाक्य में 'नट कहाँ चढ़ गया ?'— ऊपर। यहाँ भी 'ऊपर' क्रिया 'चढ़ने' की जगह बताता है।

तीसरे वाक्य में 'कहाँ' शब्द से मालूम होता है कि पूछने वाला जाने की जगह पूछता है।

इसी तरह 'वहाँ' और 'नीचे' भी जगह बताते हैं इसीलिये इधर, उधर, ऊपर, कहाँ, वहाँ, नीचे, य पाँचों शब्द किसी काम की जगह बताते हैं।

(२) वह कल आवेगा।
हम सदा सच बोलते हैं।
राम सवेरे उठा करता है।

पहले वाक्य में 'कल' शब्द से 'आने' का समय य वक्त मालूम होता है। यानी वह 'कब आवेगा?'—कल
'सदा' से बोलने का समय मालूम होता है।
'सवेरे' से उठने का समय मालूम होता है।
यहाँ 'कल', 'सदा' और 'सवेरे' किसी काम य समय बताते हैं।

(३) घोड़ा तेज़ दौड़ रहा है।
वह धीरे लिखता है।
चिन लेट जाओ।

पहले वाक्य में 'तेज़' शब्द से काम की विधि यानी तरीका मालूम होता है। यानी 'किस तर दौड़ता है ?'——तेज़।

'किस तरह लिखता है ?'———धीरे ।

'कैसे लेटो ?'———चित ।

यहाँ तेज़, धीरे, चित किसी काम का तरीक़ा बताते हैं ।

---

(४) तुम क्यों आये ?

वह इसीलिये चला गया ।

पहले वाक्य में 'क्यों' से पूछने वाला 'आने' का सबब पूछता है । इसी तरह 'इसीलिये' से 'जाने' का सबब मालूम होता है ।

(५) ख़त मत लिखो ।

हम नहीं रहेंगे ।

तुम न जाओ ।

यहाँ 'मत', 'नहीं' और 'न' शब्दों से किसी काम के होने का इंकार या निषेध मालूम होता है ।

इस पाठ में पाँच तरह के शब्द दिये गये हैं:—

(१) किसी काम की जगह बताने वाले ।

(२) किसी काम का समय बताने वाले ।

(३) किसी काम का तरीक़ा बताने वाले ।

(४) किसी काम का सबब बताने वाले।
(५) किसी काम का निषेध करने वाले।
इन सबको क्रियाविशेषण कहते हैं।

याद रक्खो कि

क्रियाविशेषण वह शब्द हैं जो किसी क्रिया के स्थान, समय, तरीक़ा, सबब या निषेध बताते हैं।

अभ्यास ५

१—क्रियाविशेषण से क्या क्या ज़ाहिर होता है ?
२—नीचे के वाक्यों में क्रियाविशेषण बताओ:—

१—यकायक मेंह आ गया।
२—मैं तुमको नहीं चाहता।
३—जल्दी चलो।
४—घोड़ा सरपट दौड़ता है।
५—वह झट खड़ा हो गया।
६—मैं यहाँ न बैठूँगा।
७—तुम ज़रूर पास हो जाओगे।
८—अक्षरों को अलग अलग लिखना चाहिये।
९—आज मैं नहीं जाने का।
१०—वह अपना काम कब छोड़ने लगा था ?
११—जब तुम बुलाओगे तभी आ जाऊँगा।
१२—यहाँ कभी न आना।
१३—गाय सबेरे दूध देती है।

३—नीचे दिये हुये क्रियाविशेषणों का प्रयोग वाक्य बनाकर दिखलाओ :—

बहुत, तब, ज्योंही, देर तक, चुपचाप,
क्यों, परसों, पारसाल, प्रति दिन।

पाठ ६

संयोजक

हरि और कैलाश पढ़ते हैं।
चाकू और छुरी लाओ।
उसने कहा कि मैं जाऊँगा।
कलम लोगे या पेन्सिल ?

पहले वाक्य में 'और' शब्द 'हरि' और 'कैलाश' को जोड़ता है यानी इससे मालूम होता है कि हरि वही काम करता है जो कैलाश। यहां 'हरि' और 'कैलाश' 'और' शब्द से जुड़ गये।

दूसरे वाक्य में 'और' शब्द 'चाकू' और 'छुरी' को जोड़ता है

तीसरे वाक्य में 'कि' शब्द से दो वाक्य जुड़ गये अर्थात 'उसने कहा' 'मैं जाऊँगा'।

इसी तरह 'या' शब्द 'कलम' और 'पेन्सिल' को जोड़ता है।

इसलिये 'और', 'कि' और 'या' जोड़ने वाले शब्द हैं।

याद रक्खो कि

जो शब्द दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ते हैं उनको संयोजक कहते हैं।

अभ्यास ६

१—नीचे के वाक्यों में संयोजक बताओ :—

१—हम और तुम चलें।
२—कौन कहता है कि यह चोर है?
३—चार आम लोगे या पाँच?
४—अगर चाहो तो चले जाओ।
५—आप लिखेंगे या मैं लिखूँ?
६—जो आप मेरी मदद न करेंगे तो मैं मर जाऊँगा
७—ईश्वर साक्षी है कि मुझे तुम्हारा ख्याल है।
८—उसके हाथ से दवात गिरी और टूट गई।
९—मैं नहीं आ सकता क्योंकि मेह बरसता है।
१०—वह गरीब है लेकिन बेइमानी नहीं करता।

२—नीचे के वाक्यों में अपनी ओर से संयोजक जोड़ो :—

१—राम————लक्ष्मण दोनों दशरथ के लड़के थे।
२—कुत्ता————बिल्ली दोनों पालू जानवर हैं।
३—मैं न गया————तुमको जाना पड़ेगा।

४—मैं कहता हूँ————तुम को जाना पड़ेगा।
५—मैं चला जाता ————बीमार हूँ।
६—मैं नहीं आ सकता————बीमार हूँ।
७— ————वह चाहे————आ सकता है।
८— ————एक रुपया ले लो————दो अठन्नियाँ।
९—मोती————मूँगा में क्या फ़र्क़ है ?
१०—यह लड़का तेज़ है————खिलाड़ी बहुत है।

पाठ ७

विस्मयादिबोधक

ओहो ! यह क्या हुआ ?

आहा ! आप आ गये।

यहाँ 'ओहो' और 'आहा' से अचंभा या विस्मय ज़ाहिर होता है।

वाहवाह ! ख़ूब लिखा।

शाबाश ! ख़ूब मारा।

यहाँ 'वाह वाह' और 'शाबाश' से तारीफ़ मालूम होती है।

छी छी ! यह बुरी लड़की है।

राम राम ! बड़ी आफ़त है।

यहां 'छीछी' और 'राम राम' से घृणा (नफ़रत) ज़ाहिर होती है।

याद रक्खो कि

अचंभा, तारीफ़ या घृणा बताने वाले शब्दों को **विस्मयादिबोधक शब्द** कहते हैं।

अभ्यास ७

विस्मयादिबोधक शब्द बताओ :—

१—बाप रे बाप ! यह क्या हुआ ?
२—धिक् धिक् ! यह शर्म की बात है।
३—हाय हाय ! मैं तो मर गया।
४—शाबाश ! खूब पास हुए।
५—ओ हो ! कैसा गन्दी गला है।
६—दैया रे ! कैसी भई ?
७—जय जय महाराज !
८—हुश् ! चुप रहो।

पाठ ८

सम्बन्धबोधक शब्द

घर के **भीतर** मत जाओ।
सीता राम के **साथ** आ रही है।
पानी के **बिना** मछली नहीं जी सकती।

पहले वाक्य में "भीतर" शब्द 'घर' का सम्बन्ध 'जाने' के साथ बताता है। अर्थात् 'जाना' क्रिया का फल 'घर' के 'भीतर' होता है न कि बाहर।

इसी प्रकार दूसरे वाक्य में "साथ" से 'राम' का सम्बन्ध 'सीता' के साथ मालूम होता है।

तीसरे वाक्य में भी "बिना" शब्द 'पानी' का सम्बन्ध 'मछली' के साथ प्रकट करता है।

याद रक्खो कि

सम्बन्ध बताने वाले शब्दों को सम्बन्धबोधक कहते हैं।

अभ्यास ८

सम्बन्धबोधक शब्द बताओ :—

१—वह दाल के साथ चावल खा रहा है।
२—बिना क़लम के कैसे लिखूँ?
३—पुस्तक समेत चले आओ।
४—सन्दूक के ऊपर कपड़ा है।
५—मैं तुम्हारे पहले आ गया।
६—वह मेरे पीछे आया।
७—आप के सामने कौन बोल सकता है?
८—वृक्ष के नीचे छाया है।
९—छत के ऊपर चोर है।
१०—जंगल के भीतर शेर है।

११—मेज़ के गिर्द क्यों घूमते हो?
१२—बुरों के संग मत बैठो।
१३—चिराग़ के तले अँधेरा है।
१४—भैंस के बदले गाय ले लो।

पाठ ९

संज्ञा के भेद

आदमी	सीतल
लड़का	लतीफ़
लड़की	चम्पा
नगर	लखनऊ
हीरा	कोहनूर

ऊपर के शब्दों को पढ़ो और देखो कि उनके अर्थों में क्या भेद है।

पहली पंक्ति की संज्ञाएं एक तरह की बहुत सी चीज़ों के नाम हैं। लेकिन दूसरी पंक्ति की संज्ञाएं केवल एक ही आदमी या शहर के नाम हैं। 'सीतल' केवल एक ही आदमी को कह सकते हैं; परन्तु 'आदमी' सब मनुष्यों के लिये आता है। इसी प्रकार 'चम्पा' केवल एक ही 'लड़की' को कह सकते हैं। हर एक लड़की को चम्पा

कह कर नहीं पुकार सकते न हर 'शहर' को 'लखनऊ' कहते हैं। 'कोहनूर' केवल एक ही 'हीरे' का नाम है।

'आदमी', 'लड़का', 'लड़की', 'नगर', 'हीरा' जो एक तरह की सब चीज़ों के नाम हैं, जातिवाचक संज्ञा हैं। 'सीतल', 'लतीफ़', 'चम्पा', 'लखनऊ', 'कोहनूर' जो केवल एक ही चीज़ के नाम हैं, व्यक्तिवाचक संज्ञा हैं।

याद रक्खो कि

(१) व्यक्तिवाचक संज्ञा केवल एक ही आदमी, जगह या चीज़ के नाम को कहते हैं।

(२) जातिवाचक संज्ञा वह संज्ञा है, जो एक तरह की हर एक चीज़ का नाम हो।

इस कपड़े में **पीलापन** है।

बर्फ़ में बहुत **ठंडक** होती है।

आग की **गर्मी** से घी पिघल जाता है।

यहाँ 'पीलापन' कपड़े के एक गुण का नाम है।

'ठंडक' बर्फ़ के एक गुण का नाम है।

'गर्मी' भी एक गुण का नाम है।

बचपन अच्छा होता है।

बुढ़ापा बुरा होता है।
मेरी थकावट दूर हो गई।
उसको बुखार है।

पहले वाक्य में 'बचपन' एक हालत या दशा का नाम है।

दूसरे वाक्य में 'बुढ़ापा' एक हालत या दशा का नाम है।

चौथे वाक्य में 'बुखार' भी एक हालत या दशा का नाम है।

हकीम ने इलाज किया।
हम लड़ाई लड़े।
वह दौड़ दौड़ा।
उसने एक चाल चली।

यहाँ 'इलाज', 'लड़ाई', 'दौड़' और 'चाल' किसी काम के नाम हैं।

उसे गुस्सा आया।
राजा के मन में दया है।
आप को क्या चिन्ता है?

यहाँ 'गुस्सा', 'दया' और 'चिन्ता' मन के
ह भाव का नाम है ।

यहाँ चार प्रकार के नाम दिये जा चुके हैं
नी गुणों के नाम, दशाओं के नाम, कामों के
ाम और मन के भावों के नाम ।

याद रक्खो कि

किसी गुण, दशा, काम या भाव के नाम को गुण-
ाचक संज्ञा या भाववाचक संज्ञा कहते हैं ।

संज्ञा के तीन भेद हैं :—

(१) व्यक्तिवाचक संज्ञा जो एक ही आदमी
ा चीज़ का नाम हो और उस तरह की हर एक
ीज़ का नाम न हो ।

(२) जातिवाचक संज्ञा जो एक तरह की
हर एक चीज़ के लिये आ सके ।

(३) गुणवाचक या भाववाचक संज्ञा जो
किसी गुण, भाव, दशा या काम का नाम हो ।

अभ्यास ६

(१) संज्ञा किसे कहते हैं ?

(२) संज्ञा के तरह की होती है ?

(३) व्यक्तिवाचक संज्ञा किसे कहते हैं ?

(४) व्यक्तिवाचक और जातिवाचक संज्ञा में क्या भेद है

(५) गुणवाचक संज्ञा किसे कहते हैं ?

(६) नीचे लिखे वाक्यों में संज्ञाओं को पहिचानो और बताओ कि वह किस प्रकार की हैं :—

१—प्यास में पानी अच्छा लगता है।
२—इस फूल में गुलाबी रंग है।
३—उसके कुत्ते का नाम शेरा है।
४—बुढ़ापे में हाथ पाँव कमज़ोर हो जाते हैं।
५—यह सर्राफ़ चाँदी के ज़ेवर बेचता है।
६—क्या तुम गेंद खेलोगे ?
७—उसकी दशा अच्छी नहीं है।
८—सच्ची दोस्ती इसी का नाम है।
९—सच्चे दोस्तों का यही काम है।
१०—भूखे हो तो खाना खा लो।
११—नींद लगी है, चारपाई लाओ।
१२—विक्टोरिया बड़ी अच्छी महारानी थी।
१३—इस दवात में स्याही नहीं है।
१४—दूध के पेड़े बनते हैं।
१५—इस दूकान का माल अच्छा होता है।
१६—चंदू तरकारी बेचा करता है।
१७—बिहारी का हाथ टूट गया।
१८—नीबू का रस खट्टा होता है।
१९—सच बोलना अच्छा और झूठ बोलना बुरा होता है
२०—केले के पत्ते बड़े बड़े होते हैं।

२१—ऐसी वर्षा हुई कि सैकड़ों मकान गिर गये।
२२—कलकत्ते में रुई की कई कलें हैं।
२३—गंगा बड़ी नदी है।

(७) नीचे के वाक्यों में ख़ाली जगहों में उचित संज्ञा करो :—

१—यमुना————के किनारे आगरा एक बड़ा——है।
२—इस————में कितने सफ़े हैं ?
३—यह सन्दूक———का बना है।
४—हमारे दर्जे में बीस———पढ़ते हैं।
५—इस फ़ौज में कितने———हैं ?
६— ———का रस मीठा होता है।
७—यह—गुड़ियों से खेलती है।
८—आप की हम पर बड़ी————है।
९—आप की दया से मेरा————दूर हो गया।
१०—चाँद की———ठंडी होती है।

पाठ १०

विशेषण के भेद

अच्छा लड़का। दो लड़के। वह लड़का।
मीठा दूध। कुछ दूध। यह दूध।

तीनों वाक्य-समूहों को पढ़ो और इनमें भेद बतलाओ। 'लड़के' के लिये तीन विशेषण आये हैं 'अच्छा', 'दो' और 'वह'।

'अच्छा' 'लड़के' के गुण को बताता है।

'दो' 'लड़कों' की **संख्या** को बताता है।

'वह' से 'लड़के' की ओर **इशारा या संकेत मालूम** होता है।

इसी प्रकार 'मीठा' दूध के गुण को, 'कुछ' परिमाण को और 'यह' संकेत को जाहिर करता है।

इस प्रकार विशेषण के तीन भेद हैं :—

(१) **गुणबोधक विशेषण**, जिससे किसी चीज़ का गुण मालूम हो, जैसे—मीठा, खट्टा, बुड्ढा, अन्धा, बुरा।

(२) **संख्या या परिमाणबोधक** विशेषण, जिससे किसी चीज़ की तौल या गिनती मालूम होती है। जैसे—एक, दो, बहुत, थोड़ा।

(३) **संकेतबोधक** विशेषण किसी चीज़ की ओर संकेत करते हैं; जैसे—यह, वह।

अभ्यास १०

१—विशेषण किसे कहते हैं ?

२—विशेषण के प्रकार के हैं ? हर एक की तारीफ़ करो।

३—नीचे के विशेषण किस किस प्रकार के हैं :—

१—काली गाय।

२—तेज़ घोड़ा।

३—यह कुत्ता।
४—कुछ दूध।
५—थोड़ा सा पानी।
६—दुबला बच्चा।
७—पतली लकड़ी।
८—पीला कागज़।
९—हरी घास।
१०—ऊँचा पहाड़।
११—सौ हाथी।
१२—यह बिल्ली।

पाठ ११

सर्वनाम के भेद

मोहन ने गोपाल से कहा, "मैं जाता हूँ।"

मोहन ने गोपाल से कहा, "तुम जाते हो।"

मोहन ने गोपाल से कहा, "वह जाता है।"

मोहन कहने वाला है। गोपाल वह है, जिससे बात कही जा रही है। मोहन अपने लिये 'मैं' इस्तेमाल करता है और गोपाल के लिये 'तुम'।

'मैं' बोलनेवाले के लिये आता है।

'तुम' उसके लिये आया है, जिससे बात की जा रही है।

१—बोलनेवाला अपने लिये जिस सर्वनाम को इस्तेमाल करता है, उसे **उत्तम पुरुष** कहते हैं; जैसे-मैं, हम।

२—जो सर्वनाम उस पुरुष के लिये आवे; जिससे बात की जाय, उसे **मध्यम पुरुष** कहते हैं; जैसे-तू, तुम।

तीसरे वाक्य में 'वह' किस स्थान पर आया है ? न मोहन के लिये, न गोपाल के लिये, किन्तु किसी अन्य के लिये। इसलिये 'वह' अन्य पुरुष है।

३—अन्य पुरुष वह है जिस के विषय में बात की जाय।

पुरुष तीन हैं :—

(१) उत्तम पुरुष।
(२) मध्यम पुरुष।
(३) अन्य पुरुष या प्रथम पुरुष

याद रक्खो कि

(१) जो सर्वनाम उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष या अन्य पुरुष को बताते हैं, उनको पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

यह जायगा ।   कोई जायगा ।

'यह' से किसी निश्चित मनुष्य का बोध होता है । 'कोई' से किसी निश्चित मनुष्य का बोध नहीं होता।

(२) जिन सर्वनामों से किसी निश्चित चीज़ का बोध हो, उनको **निश्चयवाचक सर्वनाम** कहते हैं; जैसे—यह, वह ।

(३) जिन सर्वनामों से किसी निश्चित चीज़ का बोध न हो, उनको **अनिश्चयवाचक सर्वनाम** कहते हैं, जैसे—कोई, दूसरा, सब ।

कौन पास होगा ? जो मेहनत करेगा, सो पास होगा। तुम्हारे हाथ में क्या है ? जो है उसे तुम नहीं जान सकते।

यहाँ 'कौन' और 'क्या' प्रश्न या सवाल पूछने के लिये आये हैं इसलिये यह **प्रश्नवाचक सर्वनाम** हैं। 'जो' और 'सो' से किसी संज्ञा के साथ सम्बन्ध मालूम होता है । इसलिये यह **सम्बन्धवाचक सर्वनाम** हैं।

(४) **प्रश्नवाचक सर्वनाम** सवाल पूछते हैं ; जैसे—कौन, क्या ।

(५) **सम्बन्धवाचक सर्वनाम** किसी संज्ञा से सम्बन्ध बताते हैं ; जैसे--जो, सो ।

सर्वनाम के पाँच भेद हैं :—

(१) पुरुषवाचक ।
(२) निश्चयवाचक ।
(३) अनिश्चयवाचक ।
(४) प्रश्नवाचक ।
(५) सम्बन्धवाचक ।

अभ्यास ११

(१) सर्वनाम किसे कहते हैं ?
(२) प्रश्नवाचक सर्वनाम की तारीफ़ करो।
(३) सम्बन्धवाचक सर्वनाम किसे कहते हैं ?
(४) निश्चय और अनिश्चयवाचक सर्वनाम में क्या भेद है ?
(५) पुरुष कै हैं ?
(६) मध्यम पुरुष किसे कहते हैं ?
(७) हम, मेरा, तेरा, तुम का पुरुष बताओ ।
(८) नीचे के वाक्यों में सर्वनामों के भेद बताओ:—

१—तुमको किसने मारा ?
२—आप क्या खा रहे हैं ?
३—उसकी माँ मुझे बुला रही है ।
४—जो जागेगा सो पावेगा ।
५—कोई दूर हाय हम का हामी ?
६—वह दौड़ रहा है ।

७—सीता अपने पिता के घर चली गई।
८—वह किसका लड़का है?
९—हमारे सन्दूक में तुम्हारी कोई किताब नहीं।
१०—मैं तुम्हारा नौकर नहीं हूँ।

पाठ १२

शब्दों के रूप (१)

(वचन)

लड़का आता है।	लड़के आते हैं।
मैं आता हूँ।	हम आते हैं।
काला कुत्ता आया।	काले कुत्ते आये।

दोनों ओर के वाक्यों को पढ़ो और देखो कि उनमें क्या फ़र्क़ है। पहिली ओर 'लड़का' शब्द से ज़ाहिर होता है कि सिर्फ़ एक लड़का है। दूसरी ओर 'लड़के' शब्द से बहुत से लड़कों का बोध होता है।

इसी प्रकार 'मैं' एक का बोधक है और 'हम' कई आदमियों को बतलाता है।

शब्द 'काला' से मालूम होता है कि एक कुत्ता है। शब्द 'काले' से बहुत से कुत्तों का ज्ञान होता है।

(१) जो शब्द एक चीज़ को बतावे उसे .
वचन कहते हैं।

(२) जो शब्द बहुत सी चीज़ों को बतावे
बहुवचन कहते हैं।

ऊपर के वाक्यों में क्रिया शब्दों पर विचार करो। पहली ओर की क्रियाओं का और रूप है दूसरी ओर की क्रियाओं का और। 'आता है' 'आया' एकवचन है। 'आते हैं' या 'आये' बहुवचन।

इस प्रकार संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम और के दो वचन होते हैं, एकवचन और बहुवचन।

लड़का	संज्ञा	एकवचन
लड़के	संज्ञा	बहुवचन
मैं	सर्वनाम	एकवचन
हम	सर्वनाम	बहुवचन
काला	विशेषण	एकवचन
काले	विशेषण	बहुवचन
आया	क्रिया	एकवचन
आये	क्रिया	बहुवचन

अभ्यास १२

नीचे के वाक्यों में कौन कौन शब्द किस किस वचन में हैं :—

१—अच्छे लड़के उस्ताद का कहना मानते हैं।
२—काली जामुन मीठी होती है।
३—हमने पके आम बाज़ार में देखे थे।
४—क्या आपकी किताब खो गई है?
५—आकाश में तारे निकल रहे हैं।
६—उन्होंने क्या अपराध किया है?
७—दीपक में तेल डाल दो।

पाठ १२

शब्दों के रूप (२)

लिङ्ग

लड़का आता है।	लड़की आती है।
काला कुत्ता।	काली कुतिया।

ऊपर के वाक्यों में 'लड़का' और 'कुत्ता' नर के नाम हैं 'लड़की' और 'कुतिया' स्त्रियों के नाम हैं।

नर के नाम को पुंलिङ्ग कहते हैं।

स्त्री के नाम को स्त्रीलिङ्ग कहते हैं।

अगर संज्ञा पुंलिङ्ग है तो क्रिया भी पुंलिङ्ग होती है ; जैसे–'आता है' पुंलिङ्ग क्रिया है ।

अगर संज्ञा स्त्रीलिङ्ग है तो क्रिया भी स्त्रीलिङ्ग होती है ; जैसे–'आती है' स्त्रीलिङ्ग क्रिया है ।

यदि संज्ञा पुंलिङ्ग हो तो विशेषण भी पुंलिङ्ग होते हैं ; जैसे 'काला' पुंलिङ्ग विशेषण है ।

यदि संज्ञा स्त्रीलिङ्ग हो तो विशेषण भी स्त्रीलिङ्ग होता है ; जैसे 'काली' स्त्रीलिङ्ग विशेषण है ।

इस प्रकार संज्ञा, विशेषण और क्रिया में दो लिङ्ग होते हैं

(१) पुंलिंग ।

(२) स्त्रीलिंग ।

मैं आया ।	मैं आई ।
तू आया ।	तू आई ।

इन वाक्यों में पहली ओर के वाक्य पुंलिंग को बताते हैं और दूसरी ओर के स्त्रीलिंग को ; परन्तु लिंगों का यह भेद सर्वनामों के रूप से मालूम नहीं होता । मैं और 'तू' मर्द और स्त्री दोनों के लिये आ सकते हैं इसकी पहचान केवल क्रिया के रूप से होती है ।

सर्वनाम में लिंग-भेद नहीं होता । इनके रूप दोनों लिंगों में एक सा रहता है ।

अभ्यास १३

नीचे के वाक्यों में संज्ञा, क्रिया, विशेषण तथा सर्वनाम किस किस लिंग में हैं :—

१—चम्पा बाग़ में फूल रहा है।
२—कबूतर हवा में उड़ रहे हैं।
३—जाड़े की रातें लम्बी होती हैं।
४—पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है।
५—आप गाड़ी पर चढ़ कर कहाँ गये थे?
६—कौन कौन आदमी आपके साथ हैं?
७—वे रात के समय कमरे में सोया करती हैं।

पाठ १४

अव्यय

तुम कहाँ जाते हो?	तू कहाँ जाती है?
मेरा भाई अभी आया।	मेरी बहिन अभी आई।
मोहन और गोपाल आये।	सीता और लक्ष्मी आईं।
हाय! वह मरा।	हाय! वह मरी।
वह घर के भीतर सोता है।	वे घरों के भीतर सोते हैं।

ऊपर के वाक्यों में संज्ञा, क्रिया और सर्वनाम भिन्न भिन्न वचनों और लिंगों में आये हैं; परन्तु क्रिया-विशेषण 'कहाँ' और 'अभी', संयोजक 'और', सम्बन्ध-

वाचक 'भीतर' तथा विस्मयादिबोधक 'हाय' के रूप एक ही से रहते हैं। इनके रूप में कभी किसी दशा में भी तबदीली नहीं होती। इसलिये इनको अव्यय कहते हैं।

याद रक्खो कि

अव्यय वह शब्द है; जिस का रूप कभी न बदल सके। अव्यय के चार भेद हैं:—

(१) क्रियाविशेषण अव्यय (२) संयोजक (३) सम्बन्धवाचक अव्यय (४) विस्मयादिबोधक अव्यय। इनका वर्णन पाठ ५, ६, ७, ८ में हो चुका है।

अभ्यास १४

१--अव्यय किसे कहते हैं ?

२--क्रियाविशेषण क्यों अव्यय कहलाते हैं ?

३--सम्बन्धबोधक शब्दों को अव्यय कहें चाहिये या नहीं ?

४--क्या सर्वनाम अव्यय है ?

५--अव्यय के प्रकार के होते हैं ?

६--नीचे के वाक्यों में अव्यय बताओ :—

१—कल तुम किसके साथ जा रहे थे ?
२—मैं नीचे क्यों बैठूं ?
३—रामायण और महाभारत अच्छे ग्रन्थ हैं।
४—वह वृथा बकता है।

पाठ १५

शब्दों के रूप (२)

कारक

(१) राम ने पानी पिया।
मैंने पानी पिया।

(२) उसने राम को मारा।
उसने मुझ को मारा।

(३) उसने राम से पत्र लिखाया।
उसने मुझ से पत्र लिखाया।

(४) उसने राम के लिये किताब ख़रीदी।
उसने मेरे लिये किताब ख़रीदी।

(५) वह राम से भागता है।
वह मुझ से भागता है।

(६) यह राम का भाई है।
यह मेरा भाई है।

(७) उसका राम में प्रेम है।
उसका मुझ में प्रेम है।

(८) हे राम! यहाँ आओ।

ऊपर के वाक्यों को पढ़ो और बताओ कि 'राम' और 'मैं' का वाक्य के अन्य शब्दों से क्या सम्बन्ध है?

पाठ १५

शब्दों के रूप (२)

कारक

(१) राम ने पानी पिया।
मैंने पानी पिया।

(२) उसने राम को मारा।
उसने मुझ को मारा।

(३) उसने राम से पत्र लिखाया।
उसने मुझ से पत्र लिखाया।

(४) उसने राम के लिये किताब खरीदी।
उसने मेरे लिये किताब खरीदी।

(५) वह राम से भागता है।
वह मुझ से भागता है।

(६) यह राम का भाई है।
यह मेरा भाई है।

(७) उनका राम में प्रेम है।
उनका मुझ में प्रेम है।

(८) हे राम! यहां आओ।

ऊपर के वाक्यों को पढ़ो और बताओ कि 'राम' और 'मैं' का वाक्य के अन्य शब्दों से क्या सम्बन्ध है?

(१) पहली पंक्ति में 'राम ने' और 'मैंने' से ज़ाहिर होता है कि 'राम' और 'मैं' किसी काम के करने वाले हैं। अर्थात् किसने पानी पिया ?— राम ने या मैंने।

'पीना' काम का कौन करने वाला है ?

राम या मैं ?

इसलिये संज्ञा 'राम ने' और सर्वनाम 'मैंने' कर्त्ता हैं।

क्रिया के करने वाले को कर्त्ता कहते हैं।

कर्त्ता का चिन्ह प्रायः 'ने' होता है।

(२) दूसरी पंक्ति में 'राम' और 'मैं' दोनों का रूप बदल गया है। 'राम ने' की जगह 'राम को' और 'मैंने' की जगह 'मुझ को' है। इससे मालूम होता है कि क्रिया 'मारा' का करने वाला कोई और है, 'राम' और 'मुझ' पर क्रिया का फल गिरता है किस को मारा ? 'राम को' या 'मुझ को'। इसलिये 'राम को' और 'मुझ को' कर्म हैं।

जिस पर क्रिया का फल गिरे उसे कर्म कहते हैं।

कर्म का चिन्ह 'को' है।

(३) तीसरी पंक्ति में न तो 'राम' और 'मैं' किसी

क्रिया को करने वाले हैं और न उन पर क्रिया का फल गिरता है। केवल इनके द्वारा काम किया जाता है।

किससे पत्र लिखाया ?———राम से या मुझ से। इसलिये 'राम से' और 'मुझसे' करण हैं।

जिसके द्वारा कार्य्य हो उसे **करण** कहते हैं।

करण का चिन्ह 'से' या 'द्वारा' है।

(४) चौथी पंक्ति में मालूम होता है कि काम 'राम' के या 'मेरे लिये' किया गया है।

किसके लिये किताब ख़रीदी ?———राम के लिये या मेरे लिये। इसलिये 'राम के लिये' और 'मेरे लिये' **सम्प्रदान** हैं।

जिस के लिये कोई क्रिया की जाय उसे **सम्प्रदान** कहते हैं।

सम्प्रदान का चिन्ह 'के लिये' है।

(५) पाँचवीं पंक्ति में ज़ाहिर होता है कि कोई चीज़ 'राम से' या 'मुझ से' अलग हो रही है।

इसलिये 'राम से' और 'मुझ से' अपादान हैं।

जिससे किसी चीज़ का अलग होना मालूम हो उसे **अपादान** कहते हैं।

अपादान-का चिन्ह 'से' है।

(६) छठी पंक्ति में 'राम का' या 'मेरा' किसी चीज़ से **सम्बन्ध** मालूम होता है।

किसका भाई है ?———'राम का' या 'मेरा'।

जिस से किसी के साथ सम्बन्ध मालूम हो उसे **सम्बन्ध** कहते हैं।

सम्बन्ध का चिन्ह 'का', 'के', 'की' है।

(७) सातवीं पंक्ति में 'राम' और 'मैं' प्रेम के पात्र यानी स्थान या जगह हैं।

इसलिये 'राम में' और 'मुझमें' **अधिकरण** हैं।

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से स्थान मालूम हो उसे **अधिकरण** कहते हैं।

अधिकरण का चिन्ह 'में' या 'पर' है।

(८) आठवीं पंक्ति से ज़ाहिर होता है कि 'राम' पुकारा जा रहा है। इसलिये 'राम' सम्बोधन है।

सम्बोधन वह संज्ञा है जिससे पुकारना मालूम हो। सम्बोधन का चिन्ह 'हे' है।

आठवीं पंक्ति में केवल एक ही वाक्य है दूसरे वाक्य की जगह ख़ाली है। 'मैं' सर्वनाम का सम्बोधन नहीं हो सकता।

यहाँ संज्ञा के आठ और सर्वनाम के सात रूप दिये हैं। इनको कारक कहते हैं।

कारक संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप है जिससे उनका वाक्य के अन्य शब्दों के साथ या ख़ासकर क्रिया के साथ सम्बन्ध मालूम हो।

कारक आठ हैं। (१) कर्त्ता (२) कर्म (३) करण (४) सम्प्रदान (५) अपादान (६) सम्बन्ध (७) अधिकरण (८) सम्बोधन।

सर्वनाम में केवल सात ही कारक होते हैं। सम्बोधन नहीं होता।

विशेषण, क्रिया और अव्यय में कोई कारक नहीं होता।

अभ्यास १५

१—कारक किसे कहते हैं?

२—संज्ञा में कितने कारक होते हैं?

३—सर्वनाम में कितने कारक होते हैं?

४—सब कारकों के नाम लो और उनकी तारीफ़ करो।

५—'लक्ष्मण' और 'सीता' का अपादान कारक बनाओ।

६—'हमने तुम्हारी किताब ले ली' इस वाक्य में संज्ञा और सर्वनाम किस किस कारक में आये हैं?

७—'कलकत्ते से' कौन कारक है ?
८—'तेरे लिये' और 'तुझ से' कौन कारक हैं ?
९—'करण' और 'अपादान' में क्या भेद है ?
१०—'कर्म' और 'सम्प्रदान' में क्या भेद है ?
११—नीचे के वाक्यों में कारक बताओ :—

१—आप का क्या नाम है ?
२—तुमने यह किताब किसको दी थी ?
३—बादल घिर आये और उन्होंने आसमान को छिप लिया।
४—लाहौर से आकर कहाँ चला गया ?
५—मकान में चोर है।
६—मुकुट ! चलो घर चलें।

पाठ १६
क्रिया के भेद

गुलाब रोता है।　　　　गुलाब देखता है।

क्रिया 'रोना' के लिये केवल 'रोने वाले' की ही ज़रूरत है ; परन्तु क्रिया 'देखना' के लिये दो चीज़ों की, यानी देखने वाला और जिसे देखा जाय।

पहला वाक्य पूरा है। लेकिन दूसरा वाक्य अधूरा। किसी ऐसी चीज़ का नाम लो जिसे गुलाब देखता है 'गुलाब पेड़ को देखता है' पूरा वाक्य हो गया

पहले वाक्य में कोई कर्म नहीं है।
दूसरे वाक्य में पेड़ को कर्म है।
सोता हूँ अकर्मक है।
देखता हूँ सकर्मक क्रिया है।
क्रिया के दो भेद हैं :—

(१) **अकर्मक क्रिया** वह है जिसका कर्म न हो। जैसे—सोना, होना, जागना, हँसना।

(२) **सकर्मक क्रिया** वह है जिसका कर्म हो। जैसे—देखना, मारना, खाना, पीना।

कुछ क्रियायें अकर्मक और सकर्मक दोनों होती हैं। जैसे—खुजलाना।

वह सिर को खुजलाता है। (सकर्मक)
उसका सिर खुजलाता है। (अकर्मक)

अभ्यास १६

१—क्रिया की तारीफ़ करो।
२—क्रिया के कै भेद हैं?
३—अकर्मक क्रिया किसे कहते हैं?
४—सकर्मक क्रिया किसे कहते हैं?
५—कोई ऐसी क्रिया बताओ जो सकर्मक और अकर्मक दोनों हो

६—नीचे लिखी क्रियाओं के भेद बताओ :
लोटना, उठना, बैठना, सीना, बजाना, जग
पकड़ना, हँसना, घुमाना, जाना, आना, पुका
रूठना, पिघलना, लटकाना, हटाना ।

पाठ १७
शब्दों के रूप (४)
काल

वह जाता है । वह गया । वह जायगा ।

इन वाक्यों को पढ़ो और बताओ कि ती
तरह की क्रियाओं में क्या फ़र्क़ है ।

'जाता है' से ज़ाहिर होता है कि जाने
काम भी होता है ।

'गया' से ज़ाहिर होता है कि जाने का क
अब से पहले हो गया ।

'जायगा' से ज़ाहिर होता है कि जाने
काम अब के बाद होगा ।

बच्चा रोता है। बच्चा रोया। बच्चा रोवेगा।

हरि किताब पढ़ता है। हरि ने किताब पढ़ी। हरि किताब पढ़ेगा। मैं आता हूँ। मैं आया। मैं आऊँगा।

यहाँ 'रोता है', 'पढ़ता है', 'आता हूँ' से मालूम होता है कि क्रिया का **काम अभी हो रहा है।**

'रोया', 'पढ़ी', 'आया' से ज़ाहिर होता है कि **काम अब से पहले हो गया।**

'रोवेगा', 'पढ़ेगा', 'आऊँगा' से ज़ाहिर होता है कि **काम अब के बाद होगा।**

जिस क्रिया से काम का अभी होना पाया जाय, उसे वर्तमान काल कहते हैं।

जिस क्रिया से काम का अब से पहले होना मालूम हो उसे भूतकाल कहते हैं।

जिस क्रिया से काम का अब के बाद होना मालूम हो उसे भविष्यत् काल कहते हैं।

काल क्रिया के होने का समय बताते हैं।

काल तीन प्रकार के हैं :—

(१) वर्तमान काल।

(२) भूतकाल।

(३) भविष्यत् काल।

अभ्यास १७

१—काल किसे कहते हैं ?

२—काल कै होते हैं ?

३—हर एक काल की तारीफ़ करो।

४—नीचे के वाक्यों में कौन कौन क्रिया किस किस काल में है :—

१—राम ने लङ्का पर चढ़ाई की।
२—मैंने सबक़ याद कर लिया।
३—आप कहाँ स आते हैं ?
४—हम यहाँ कभी न जायँगे।
५—यह किताब कब लिखी गई थी ?
६—आपका कहना मैं न मानूँगा।
७—कौन कहता है कि उसने अपराध किया ?
८—वह तालाब में नहाता है।
९—हम एक पत्र लिखेंगे।
१०—मैं दिल्ली चला गया था।
११—यह सच बोलता है।
१२—इस आदमी ने मेरा थैली उठा ली थी।

५—नीचे के शब्दों के साथ दी हुई क्रियाओं के रूप जोड़ दो :—

१—सीता राम क साथ वन को————(जाना)
२—हम अभी किताब————————(पढ़ना)
३—कल्लू कल कलकत्ते में————————(आना)
४—दो दिन हुए कि तुमने छतरी————(बनाना)

५—वह रोज़ दो सफ़ा——————————(पढ़ना)
६—आप अच्छे आदमी——————————(होना)
७—कल रात उसने एक गीत——————————(गाना)
८—मैं तुम से जल्द——————————(मिलना)
९—आपकी कृपा से मैं पास——————————(होना)
१०—गोविन्द का मकान बरसात में——————————(गिरना)
११—आप कब भोजन——————————(करना)
१२—आपने कब भोजन——————————(करना)

पाठ १८

वाक्य और उसके भाग

चौकी पर । वह चौकी पर बैठा है ।
मेरे लिये । तुम मेरे लिये खाना लाओ ।
कलकत्ते से । हम कलकत्ते से आते हैं ।

ऊपर दो प्रकार के शब्द-समूह दिये हुए हैं । एक वह जिनसे कुछ मतलब पूरा नहीं होता । दूसरे वह जिन से मतलब पूरा हो जाता है । 'चौकी पर' कहने से कहने वाले का कुछ मतलब समझ में नहीं आता । न जाने कहने वाला क्या चाहता है; परन्तु "वह चौकी पर बैठा है" कहने से पूरा मतलब समझ में आ जाता है।
इसी प्रकार 'मेरे लिये' या 'कलकत्ते से' कहने से कुछ बात समझ में नहीं आता ; परन्तु 'तुम मेरे लिये

खाना लाओ' या 'हम कलकत्ते से आते हैं' कह
से पूरा आशय समझ में आ जाता है। इसलिये इन
वाक्य कहते हैं।

शब्दों का वह समूह जिससे पूरा अर्थ समझ
आ सके वाक्य कहलाता है।

मोहन किताब पढ़ता है।
लोग सोते हैं।
लड़के कहाँ जाते हैं ?

ऊपर तीन वाक्य दिये हैं।

पहले वाक्य में किसकी बाबत कहा गया है ?—
मोहन की बाबत।

क्या कहा गया है ?———किताब पढ़ता है

दूसरे वाक्य में किसकी बाबत बयान है ?———
लोगों की बाबत।

क्या बयान है ?———सोते हैं।

तीसरे वाक्य में किसकी बाबत पूछा गया है ?—
लड़कों की बाबत।

क्या पूछा गया है ———कहाँ जाते

'मोहन', 'लोग', 'लड़के' जिनकी बाबत
कहा गया है, सब उद्देश्य हैं।

'किताब पढ़ता है', 'सोते हैं', 'कहाँ जाते हैं' जो उद्देश्य की बाबत बयान किये गये हैं, विधेय हैं। हर एक वाक्य के दो भाग होते हैं:—

(१) उद्देश्य—जिसके विषय में कुछ कहा जाय।

(२) विधेय—उद्देश्य की बाबत जो कहा जाय।

अभ्यास १८

१—वाक्य किसे कहते हैं?

२—वाक्य के के भाग हैं?

३—उद्देश्य और विधेय की तारीफ़ करो।

४—क्या नीचे के शब्द-समूह वाक्य हैं?

१—जो कुछ। २—तुम पर।
३—आओ। ४—हम नहीं खा सकते।
५—चमेली अच्छी लड़की है।
६—सुदक्षिणा रघु की माँ का नाम था।

५—नीचे के वाक्यों में उद्देश्य और विधेय बताओ:—

१—चलो।
२—आपका क्या नाम है?
३—उस्ताद ने लड़कों को यह किताब पढ़ाई
४—आपका भाई पड़ा पड़ा क्या करता है?
५—इस बाग के वृक्ष गर्मियों में सूख जाते हैं
६—चन्द्रमोहन लाहौर से दिल्ली को चला गया
७—हमारे लिये आप बहुत कुछ करते हैं

पाठ १६

वाक्य-रचना

गुलाब सोता है।

सीता ने राम को अपनी आँख से वन में देखा

वह कलकत्ते से मेरे लिये किताब लाया।

ऊपर के वाक्यों में उद्देश्य बताओ——गुला सीता ने और वह।

यह वाक्य में किस जगह रक्खे हैं?—शुरू में

क्रिया किस जगह रक्खी गई है?—अन्त में

अन्य कारक किस जगह हैं?——उद्देश्य क्रिया के बीच में।

नियम १—उद्देश्य या कर्त्ता बहुधा वाक्य शुरू में आता है।

नियम २—क्रिया हमेशा वाक्य के अन्त आती है।

नियम ३—कर्म, करण, सम्प्रदान, अपाद और अधिकरण को क्रिया और उद्देश्य के बीच रखते हैं।

हे लक्ष्मण! आप कहाँ हैं?

मनोहर! यहाँ आओ।

नियम ४—सम्बोधन कर्त्ता से भी पहले और त्य के शुरू में आता है।

राम की किताब।
चंदू की क़लम।
काला घोड़ा।
सफ़ेद गाय।

नियम ५—सम्बन्धकारक और विशेषण संज्ञा पहले आते हैं।

अभ्यास १६

नीचे के वाक्यों को शुद्ध करो :—

१—लाता हूँ मैं किताब।
२—गेंद से खेलते हैं वे।
३—क़लम उसकी टूट गई।
४—कहाँ है भाई, आकर रहोगे।
५—कम्बल काला मेरा नहीं है।
६—हम कुछ नहीं चाहते करने लिये।
७—शत्रु का तलवार से सिर काट लिया राजा ने।
८—सो रहे हैं खाट पर दोनों लड़के।
९—अलमारी में हैं चन्द्रा की गुड़ियाँ।

पाठ २०
वर्ण या अक्षर

वर्ण या अक्षर वह छोटी से छोटी आवाज़ है जिसके टुकड़े न हो सकें ; जैसे—अ, इ, क।
वर्ण दो प्रकार के होते हैं:—

१—स्वर-जो स्वयंही बोले जा सकें। जैसे—अ,उ

२—व्यञ्जन-जो बिना स्वर की सहायता के बोले जा सकें ; जैसे—क, ख, प, ल।

स्वर के दो भेद हैं:—

१—ह्रस्व जिनके उच्चारण में सब से कम सम लगे। ह्रस्व चार हैं—अ, इ, उ, ऋ।

२—दीर्घ जिनके उच्चारण में ह्रस्वों से दूना सम लगे। दीर्घ स्वर सात हैं—आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ

व्यञ्जन चालीस हैं—क, क़, ख, ख़, ग, ग़, घ, ङ च, छ, ज, ज़, झ, ञ। ट, ठ, ड, ड़, ढ, ढ़, ण। त, द, ध, न। प, फ, फ़, ब, भ, म। य, र, ल, व, श, ष, स,

इनके सिवाय तीन और अक्षर हैं जो अकेले क नहीं आते; किन्तु स्वरों के पीछे आते हैं। (१) (अनुस्वार) जैसे—गं (२) चन्द्रविन्दु जैसे—हाँ, हूँ, (३) अः (विसर्ग) जैसे—गाः, धुः।

अभ्यास २०

१—वर्ण या अक्षर किसे कहते हैं ?

२—अक्षर के प्रकार के होते हैं ?

३—स्वर किसे कहते हैं ?

४—व्यञ्जन किसे कहते हैं ?

५—स्वर के भेद बताओ और उनकी तारीफ़ करो।

६—नीचे के अक्षरों में ह्रस्व, दीर्घ स्वर और व्यञ्जन बताओ :—

ख, च, ए, प, म, ऊ, इ, ऋ, ओ, स, क, उ, औ, न।

नीचे के स्वरों में अनुस्वार और विसर्ग जोड़ो :—

उ, ए, आ, इ, औ, ओ।

७—नीचे के व्यञ्जनों में दिये हुए स्वरों को जोड़ो:—

च्+उ,	न्+ऊ
क्+ऋ,	र्+इ
ह्+ए,	ख्+औ
ह्+आ,	स्+अ

परिशिष्ट*

पाठ २१

लिङ्ग-परिचय

तेरहवें पाठ में बताया जा चुका है कि लिङ्ग दो हैं—स्त्रीलिङ्ग और पुंल्लिङ्ग । प्राणिवाचक शब्दों लिङ्ग तो आसानी से पहचाना जा सकता है.; 'कुत्ता' पुंल्लिङ्ग है और 'कुतिया' स्त्रीलिङ्ग ; प अप्राणिवाचक शब्दों के लिङ्गों की कुछ पहच यहाँ दी जाती हैं:—

पुंल्लिङ्ग शब्दों की पहचान:—

(१) जिनके अन्त में 'आ' हो; जैसे—घोड़ा, मो

(२) जिन भाववाचक शब्दों के अन्त में आव, पा, त्व हो; जैसे—चढ़ाव, बचपन, बुढ़ापा, स्वत्व

(३) महीनों और दिनों के नाम; जैसे—कार्ति बुधवार ।

(४) पहाड़ों के नाम; जैसे—विंध्याचल ।

(५) तारों के नाम; जैसे—सूर्य, चन्द्र ।

* [illegible] अध्यापक की इच्छा पर [illegible] [illegible] जा सकता है, [illegible]

पाठ २२

वचन-परिचय

बारहवें पाठ में कहा जा चुका है कि वचन दो ह
हैं—एकवचन और बहुवचन। इनकी पहचान प्रायः क्रि
के द्वारा होती है; जैसे—मैंने **आम** खाया (यहाँ 'आ
एकवचन है) और मैंने आम खाये (यहाँ 'आम' बहुवचन है

पुंलिङ्ग आकारान्त शब्दों के 'आ' का बहुवचन
'ए' हो जाता है, जैसे—एक लड़का, चार लड़के ; पर
अन्य पुंलिङ्ग शब्द साधारणतया दोनों वचनों में
ही से रहते हैं; जैसे—एक ऋषि आया। चार ऋ
आये। एक उल्लू बोला। दो उल्लू बोले।

स्त्रीलिङ्ग एकवचन शब्दों के बहुवचन बनाने
लिये नीचे लिखे नियमों पर विचार करना चाहिये

(१) अकारान्त शब्दों के 'अ' का 'एँ'
जाता है; जैसे—भैंस से भैंसें; गाय से गायें।

(२) आकारान्त शब्दों के अन्त में 'एँ'
'यें' लगाते हैं; जैसे—मालायें, मातायें।

(३) इकारान्त और ईकारान्त शब्दों के अन्त में
लगाते हैं; परन्तु बहुवचन में बड़ी 'ई' की छोटी 'इ
जाती है; जैसे—पाँति से पाँतियाँ, शीशी से शीशि

(४) उकारान्त और ऊकारान्त शब्दों के अन्त में ' या 'यें' लगाते हैं; जैसे—

'वस्तु से वस्तुयें। झाड़ू से झाड़ूयें'।

नोट—बड़े 'ऊ' का बहुवचन में छोटा 'उ' हो जाता है।

पाठ २२

संज्ञा और सर्वनाम के रूपान्तर

हम ऊपर बता चुके हैं कि शब्दों के लिङ्ग, वचन और रकों के अनुसार रूप बदल जाते हैं। यहाँ कुछ शब्दों रूप दिये जाते हैं:—

अकारान्त पुंलिङ्ग शब्द 'बैल'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	बैल, बैल ने	बैल, बैलों ने
कर्म	बैल को	बैलों को
करण	बैल से	बैलों से
सम्प्रदान	बैल को, के लिये	बैलों को, के लिये
अपादान	बैल से	बैलों से
सम्बन्ध	बैल का	बैलों का
अधिकरण	बैल पे, पर, में	बैलों पे, पर, में
सम्बोधन	हे बैल !	हे बैलो !

स्त्रीलिङ्ग 'गाय' शब्द के रूप भी 'बैल' के रूपों के समा
चलते हैं केवल कर्त्ता के बहुवचन में 'गायें' रूप हो जाता

आकारान्त पुंलिंग शब्द 'घोड़ा'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	घोड़ा, घोड़े ने	घोड़े, घोड़ों ने
कर्म	घोड़े को	घोड़ों को
करण	घोड़े से	घोड़ों से
सम्प्रदान	घोड़े को, के लिये	घोड़ों को, के लि
अपादान	घोड़े से	घोड़ों से
सम्बन्ध	घोड़े का	घोड़ों का
अधिकरण	घोड़े पै, पर, में	घोड़ों पै, पर,
सम्बोधन	हे घोड़े !	हे घोड़ो !

आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द 'माता'

कर्त्ता	माता, माता ने	मातायें, माताओं
कर्म	माता को	माताओं को
करण	माता से	माताओं से
सम्प्रदान	माता को, के लिये	माताओं को, के
अपादान	माता से	माताओं से
सम्बन्ध	माता का	माताओं का
अधिकरण	माता पै, पर, में	माताओं पै, पर,
सम्बोधन	हे माता !	हे माताओ !

कारक	एकवचन	बहुवचन
अधिकरण	माली पै, पर, में	मालियों पै, पर
सम्बोधन	हे माली !	हे मालियो !

ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप भी 'माली' समान चलते हैं ।

उकारान्त पुंलिंग शब्द 'साधु'

कर्ता	साधु, साधु ने	साधु, साधुओं
कर्म	साधु को	साधुओं को
करण	साधु से	साधुओं से
सम्प्रदान	साधु को, के लिये	साधुओं को, के
अपादान	साधु से	साधुओं से
सम्बन्ध	साधु का	साधुओं का
अधिकरण	साधु पै, पर, में	साधुओं पै, पर
सम्बोधन	हे साधु !	हे साधुओं !

उकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप भी 'साधु' शब्द के समान चलते हैं ।

ऊकारान्त पुंलिंग शब्द 'डाकू'

कर्ता	डाकू, डाकू ने	डाकू, डाकुओं
कर्म	डाकू को	डाकुओं को

कारक	एकवचन	बहुवचन
करण	ठाकुर से	ठाकुरों से
सम्प्रदान	ठाकुर को, के लिये	ठाकुरों को, के लिये
अपादान	ठाकुर से	ठाकुरों से
सम्बन्ध	ठाकुर का	ठाकुरों का
अधिकरण	ठाकुर में, पर, मे	ठाकुरों में, पर, मे
सम्बोधन	हे ठाकुर !	हे ठाकुरो !

अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप भी 'ठाकुर' शब्द के रूपों के समान चलते हैं।

एकारान्त शब्द 'चौबे'

कर्त्ता	चौबे, चौबे ने	चौबे, चौबों ने
कर्म	चौबे को	चौबों को
करण	चौबे से	चौबों से
सम्प्रदान	चौबे को, के लिये	चौबों को, के लिये
अपादान	चौबे से	चौबों से
सम्बन्ध	चौबे का	चौबों का
अधिकरण	चौबे में, पर, मे	चौबों में, पर, मे
सम्बोधन	हे चौबे !	हे चौबो !

ओकारान्त शब्द 'ऊधो'

कर्त्ता	ऊधो, ऊधो ने	ऊधो, ऊधो ने

कारक	एकवचन	बहुवचन
करण	तुझ से	तुम से
सम्प्रदान	तेरे लिये	तुम्हारे लिये
अपादान	तुझ से	तुम से
सम्बन्ध	तेरा	तुम्हारा
अधिकरण	तुझ में, पर	तुम में, पर

अन्य पुरुष सर्वनाम 'वह'

कर्त्ता	वह, उसने	वे, उन्होंने
कर्म	उसे, उसको	उन्हें, उनको
करण	उससे	उनसे
सम्प्रदान	उसके लिये	उनके लिये
अपादान	उससे	उनसे
सम्बन्ध	उसका	उनका
अधिकरण	उसमें, पर	उनमें, पर

सर्वनाम 'यह'

कर्त्ता	यह, इसने	ये, इन्होंने
कर्म	इसे, इसको	इन्हें, इनको
करण	इससे	इनसे
सम्प्रदान	इसके लिये	इनके लिये
अपादान	इससे	इनसे

कारक	एकवचन	बहुवचन
सम्बन्ध	इसका	इनका
अधिकरण	इसमें, पर	इनमें, पर

सर्वनाम 'कौन'

कर्त्ता	कौन, किसने	कौन, किन्होंने
कर्म	किसको	किनको
करण	किससे	किनसे
सम्प्रदान	किसके लिये	किनके लिये
अपादान	किससे	किनसे
सम्बन्ध	किसका	किनका
अधिकरण	किसमें, पर	किनमें, पर

सर्वनाम 'जो'

कर्त्ता	जो, जिसने	जो, जिन्होंने
कर्म	जिसको	जिनको
करण	जिससे	जिनसे
सम्प्रदान	जिसके लिये	जिनके लिये
अपादान	जिससे	जिनसे
सम्बन्ध	जिसका	जिनका
अधिकरण	जिसमें, पर	जिनमें, पर

पाठ-सूची

पूर्वार्ध

गद्यभाग

विषय — पृष्ठ

विषय		पृष्ठ

पद्यभाग

उत्तरार्ध

गद्यभाग

विषय				पृष्ठ

पद्यभाग

बालविनोद

चौथा भाग

पूर्वार्ध

गद्यभाग

१—विद्या की महिमा

एक दिन एक लड़का अपनी माता के पास बैठा हुआ कुछ सोच रहा था। सोच में बैठे हुए पुत्र से माता ने कहा—"बेटा, किस सोच में बैठे हो?" लड़के ने कहा—"मैं धनवान् होने का उपाय सोच रहा हूँ।" माता ने कहा—"तुमको धनी होने की चाट कहाँ से लगी?" लड़के ने कहा—"मैं जहाँ देखता हूँ वहाँ धनवान् मनुष्य की प्रतिष्ठा होती है।"

माता लिखी पढ़ी थी। वह अपने पुत्र के जी की बात ताड़ गई। वह बोली—"यह तो बताओ, धनवान् कहते किसे हैं?" लड़के ने कहा—"धनवान् वही है जिनके पास रुपया पैसा अधिक हो।" फिर माता ने कहा—"हाँ, यह तो ठीक है, परन्तु बचपन में कोई धन नहीं पैदा कर सकता।

पड़ता है। उद्योग के बिना संसार का कुछ भी नहीं बन सकता।

मनुष्यों की बात जाने दीजिए, छोटे छोटे कीड़ों तक को हम काम करते देखते हैं। शहद की मक्खी को देखिए, यह कितना छोटा जीव है। इन मक्खियों में से कुछ पुष्पों का रस चूस कर लाती हैं, कुछ रहने के लिए छत्ता लगाती हैं और कुछ शहद तैयार करती हैं। सारांश यह कि शहद की मक्खियाँ भी कुछ न कुछ उद्योग अवश्य करती ही रहती हैं।

बड़े दुःख की बात है कि छोटे छोटे कीड़े मकोड़े तो रात दिन उद्योग में लगे रहें और मनुष्य चुपचाप हाथ पर हाथ धरे बैठे रहें। निठल्ले बैठने के लिए मनुष्य नहीं बनाया गया। वह काम और उद्योग करने के ही लिए बनाया गया है। आलस में पड़े रहने और उद्योग न करने से मनुष्य का कोई काम नहीं बन सकता।

घर में अनेक प्रकार के खाने पीने के पदार्थ रक्खे हों, सामने औषधों का ढेर लग रहा हो, परन्तु उनके देखने से ही न तो किसी की भूख दूर होगी और न रोग शान्त होगा। भूख और रोग के दूर करने के लिए उनको उचित रीति से खाना पीना चाहिए। खाना पीना भी एक प्रकार का काम है। उसके लिए भी उद्योग की आवश्यकता है। अतएव कार्य्य-सिद्धि के लिए सबको उद्योग करना चाहिए।

जो मनुष्य काम नहीं करते, योंही निकम्मे पड़े रहते

किया और पुराने की जगह एक और नया कपड़ा उसके लि
ले दिया।

६-शत्रु के धोखे में न आओ।

एक मुर्गा एक वृक्ष की डाल पर बैठा था। उसे दे
कर लोमड़ी के मुँह में पानी भर आया। वह सोचने लगी
किसी प्रकार इसको मार कर खाना चाहिए। परन्तु वह पृ
पर थी और वह मुर्गा वृक्ष पर था। पकड़ती तो कैसे पकड़ती

उस वृक्ष के नीचे खड़ी हो कर लोमड़ी ने मुर्गे से कहा
"क्या तुमने ढिंढोरा नहीं सुना ?" मुर्गे ने पूछा—"कै
ढिंढोरा ?" लोमड़ी ने कहा—"तुमको अभी तक मालूम
नहीं! दस दिन से बराबर पंचायत हो रही थी। सारे संसा
के पशु इकट्ठे हुए थे। सबने शपथें खाईं कि अब कोई ए
दूसरे को न सतावेंगे और आपस में मेल से रहा करेंगे। ए
प्रतिज्ञा-पत्र लिखा गया और उस पर सबने अपने अपने हस्त
क्षर किये। हमारे महाराजा सिंह की उस पर मुहर हुई।" य
सुन कर मुर्गे ने कहा—"यह तो बड़े आनन्द की बात हुई।"

इतने में मुर्गा अपनी गर्दन उठा कर ऐसा कुड़कुड़ाय
जैसे किसी भयानक जीव को देख रहा हो। यह देख लोमड़ी
पूछा—"क्या है ?" उसने कहा—"कुछ नहीं दो शिका
कुत्ते दौड़े चले आ रहे हैं।" यह सुन कर लोमड़ी दुम दबा क

भागने लगी। मुर्गे ने कहा—"क्यों, क्यों कहाँ चली? अब तो कोई भय की बात नहीं है।" लोमड़ी ने कहा—"यह तो सच है, परन्तु कहीं इन कुत्तों ने भी तुम्हारी तरह ढिँढोरा न सुना हो।"

७—सज्जनता का बर्ताव

अच्छे पुरुष सबके साथ अच्छी तरह बर्ताव किया करते हैं। वे सदा ऐसे ही वचन बोला करते हैं जिससे सबका चित्त प्रसन्न हो। भले पुरुष जब किसी से मिलते हैं तब उसका कुशल-समाचार पूछते हैं और सबका आदर-सत्कार करते हैं। इसी को सज्जनता का बर्ताव कहते हैं।

जिस मनुष्य की वाणी में नम्रता और मीठापन नहीं उसके साथ मिलने को किसी का मन नहीं चाहता। सब कोई उससे बचते ही रहते हैं। ऐसा मनुष्य शीघ्र ही संसार में बुराई का घर बन जाता है।

नमस्कार और प्रणाम करके कुशल पूछने और अपनी मीठी वाणी से दूसरे को प्रसन्न करने में गाँठ की एक कौड़ी भी नहीं लगती। परन्तु ऐसा करने से लाभ बहुत होता है। इसीलिए सत्पुरुष दूसरों के साथ सदा सज्जनता का बर्ताव किया करते हैं।

जो कोई अपने घर आवे उसके साथ सज्जनता का बर्ताव

करना चाहिए। जो मिलने योग्य हों उनसे न मिलना और उनके साथ दुर्जनता का बर्ताव करना उचित नहीं। देख करनेवालों की गिनती सज्जनों में नहीं हो सकती। जिसमें सज्जनता नहीं वह सज्जन कदापि नहीं हो सकता।

सज्जनता का बर्ताव सीखने के लिए उत्तम मनुष्यों की संगति करनी चाहिए। श्रेष्ठ पुरुषों से मिल कर उनकी सज्जनता के बर्ताव को ध्यान से देखना चाहिए।

सज्जन पुरुषों की पहली पहचान यह है कि वे दूसरों की प्रतिष्ठा का ध्यान रक्खा करते हैं। वे अपने सेवकों पर कृपा किया करते हैं और किसी से एक आध अपराध भी उनका हो जाय तो वे उसको क्षमा कर देते हैं।

जो विद्यार्थी सज्जनता का बर्ताव करते हैं उनको सब चाहते हैं। वे सदा सुखी रहते हैं और उन्हीं की प्रतिष्ठा होती है।

८—सत्यभाषण

सत्य से बढ़ कर संसार में कोई पदार्थ नहीं। सत्य के सहारे से मनुष्य भारी से भारी आपदाओं को भी पार कर जाता है। सत्य बोलनेवाले मनुष्य की संसार में बड़ी प्रतिष्ठा होती है। मनुष्य को उचित है कि चाहे कितना ही भारी संकट क्यों न आ जाय परन्तु सत्य का हाथ से न जाने दे।

लड़को, तुम सदा सत्य बोला करो। भूल से भी कभी झूठ बात मुँह से न निकाला करो। झूठ बोलोगे तो लोगों की दृष्टि से गिर जाओगे और फिर तुम्हारा विश्वास जाता रहेगा। यदि फिर सत्य बात भी कहो तो कोई तुम्हारा विश्वास न करेगा। देखो, मैं तुम्हें एक सत्य बोलनेवाले लड़के का वृत्तान्त सुनाता हूँ। तुम उसे ध्यान देकर सुनो।

एक बार बहुत से मुसलमान बग़दाद शहर को जा रहे थे। चलते चलते वे एक जंगल में पहुँचे। सायंकाल हो गया था और बस्ती थी बड़ी दूर। जाड़ा ऐसे कड़ाके का पड़ रहा था कि सबके हाथ पाँव ऐंठे जाते थे। वे लोग उस जंगल में जा ही रहे थे कि इतने में बहुत से डाकू उन पर टूट पड़े। उनका सारा माल असबाब डाकुओं ने छीन लिया।

उन्हीं यात्रियों में एक छोटा सा लड़का भी था। जब डाकुओं ने उसके पास कुछ न पाया तब वे उसके कपड़े टटोलने लगे। परन्तु फिर भी कुछ उनके हाथ न लगा। तब एक डाकू ने लड़के से पूछा—"क्या तेरे पास कुछ नहीं है?" लड़का था सत्यवादी। उसने झट कह दिया—"है तो।"

डाकुओं ने समझा कि लड़का हँसी कर रहा है और फिर पूछा—"क्या है?" लड़के ने फिर सत्य कह दिया—"चालीस रुपये"। डाकुओं ने फिर पूछा—"कहाँ हैं?" लड़के ने सत्य सत्य बता दिया—"मेरे कपड़ों में"। डाकुओं ने फिर उसके कपड़ों को अच्छी तरह टटोला परन्तु फिर भी उन्हें कुछ न मिला। तब

उन्होंने कहा—"क्या हमारे साथ हँसी कर रहा है?" लड़के ने कहा—"नहीं, मैं सत्य कह रहा हूँ।"

ये बातें हो ही रही थीं कि इतने में उन डाकुओं का सरदार आ गया। उसने भी आकर लड़के से पूछा—"तेरे पास भी कुछ है?" लड़के ने उससे कह दिया—"हाँ है।" सरदार ने पूछा—"कहाँ है?" लड़के ने कहा—"अँगरखे के अस्तर में सिला हुआ है।" सरदार ने जो अँगरखे की सीवन उधेड़ी तो लड़के का कहना सत्य निकला।

इस पर सरदार ने कहा—"तू बड़ा मूर्ख है। यदि न बताता तो भला किसी को इन रुपयों का पता लगता?" लड़के ने कहा—"चलते समय मेरी माता ने मुझे सिखाया था और कहा था कि बेटा, कभी झूठ मत बोलना। इसलिए मैंने सत्य सत्य कह दिया।"

लड़के की इस भोली भाली सत्य बात का डाकुओं के सरदार के चित्त पर बड़ा प्रभाव पड़ा। वह अपने मन में सोचने लगा कि यह एक छोटा सा लड़का तो अपनी माता की आज्ञा का ऐसा पालन करता है और मैं बूढ़ा होने को आया और मैं अभी तक ईश्वर की आज्ञा को नहीं मानता! धिक्कार है मुझे!

सरदार उस समय बड़ा लज्जित हुआ और बड़ा पछताया। उसने उस लड़के का हाथ पकड़ कर कहा—"मैं तेरे सामने सौगंद खाता हूँ। अब कभी ईश्वर की आज्ञा से मुँह

मोड़ूँगा।" उसके साथ सब साथी डाकुओं ने भी प्रतिज्ञा कर ली कि अब हम किसी को कष्ट न देंगे। उन्होंने अपने सरदार से कहा—"जैसे आज तक आप बुराई में हमारे सरदार रहे वैसे ही अब भलाई में भी हमारे सरदार रहिए।"

उन डाकुओं ने सारा माल यात्रियों का लौटा दिया और वे उसी समय से सुमार्ग पर चलने लगे।

उस लड़के का नाम अब्दुलकादिर था। यह लड़का ईरान का एक बहुत बड़ा नामी साधु हो गया है।

६—परोपकार

किसी राजा की सेना का एक सिपाही बड़ा बली और चतुर था। राजा उसकी बड़ी प्रतिष्ठा करता था। राजा को उस पर इतना विश्वास था कि उसने सारा काम उसी पर छोड़ रक्खा था। राजा जो काम करता सब उसी की सम्मति से।

कुछ दिन तक तो वह सिपाही राज्य के प्रत्येक काम में तन मन से उद्योग करता रहा। परन्तु अन्त में उसके मन में यह आया कि राजा को राजगद्दी से उतार कर आप ही राजा बन बैठे। इसी इच्छा को पूरी करने के लिए, वह, धीरे धीरे गुप्त रूप से षड्यन्त्र रचने लगा।

उस षड्यन्त्र का सारा भेद राजा को मालूम हो गया। राजा

इस कारण मैंने कहा कि प्रेम का बन्धन होना चाहिए जिससे उसका सारा शरीर बँध जाय और वह बन्धन किसी के काटे न कट सके। बहुत कुछ सोच विचार के अनन्तर उपकार की कड़ाई से अधिक और कोई बन्धन मेरी समझ में नहीं आया। कारण यह कि उपकार का बन्धन मन पर होता है और मन सारे शरीर का राजा है। जब मन बन्धन में डाल दिया गया तब उसके हाथ, पाँव आदि सारे अनुचर भी बन्धन में हो जाते हैं। उपकार के बन्धन में बँध कर उपकार करने वाले को कभी कोई हानि नहीं पहुँचा सकता।

१०—महादेव गोविन्द रानाडे

विद्यार्थियो, मैं जानता हूँ, तुम में से कोई ही ऐसा होगा जिसने बंबई नगर का नाम न सुना हो। समुद्र के तट पर यह एक बहुत ही विशाल नगर है। बंबई का आम, जो तुम खाते हो, पहले पहल इसी नगर से लाया गया था। विलायत की बहुत सी वस्तुएँ इसी नगर से यहाँ आती हैं। बंबई के समीप ही एक पूना नामक नगर है। वहाँ के एक महापुरुष का वृत्तान्त सुनो। पहले यह उचित होगा कि उस महापुरुष का नाम बतला दिया जाय।

उनका नाम महादेव गोविन्द रानाडे था। बचपन में ये बड़े दुर्बल थे। सदा गूँगों की तरह चुपचाप बैठे रहा करते

ऐसा देख कर और यही समझ कर कि कोई साधारण मनुष्य होगा, उनसे कहने लगी—"भैया, तनिक मेरे बोझ को हाथ लगा दो"। यह सुनते ही उन्होंने बोझ उठा कर बुढ़िया के सिर पर रख दिया।

देखो, वे कैसे सज्जन थे। यदि और कोई इतने बड़े पद पर होता तो धरती पर पाँव भी न रखता, बोझ उठाना तो अलग रहा, उस बेचारी दीन बुढ़िया की ओर आँख उठा कर देखता भी नहीं। यदि रानाडे महाशय में ऐसे ऐसे सद्गुण न होते तो आज उनकी इतनी प्रतिष्ठा कैसे होती।

११—पिता की आज्ञा का पालन

भला ऐसा कौन होगा जो श्रीरामचन्द्र जी की कथा न जानता हो। वे अपने पिता की आज्ञा से, अयोध्या की राजगद्दी अपने भाई भरत के लिए त्याग कर, चौदह वर्ष तक वन में रहे। यह बात बहुत पुरानी है। अभी कुछ दिन हुए, एक राजकुमार ने ठीक ऐसा ही त्याग कर दिखाया। यह कितने आश्चर्य की बात है कि वह भी श्रीरामचन्द्र जी का ही वंशज था। इसका वृत्तान्त सुनो।

मेवाड़ के राणा गजसिंह के दो पुत्र थे। एक का नाम भीमसिंह था और दूसरे का जयसिंह। ये दोनों यमज भ्राता थे। भीमसिंह जयसिंह से कुछ घंटे पूर्व जन्मा था इस कारण

यही राजसिंहासन का अधिकारी था। धर्म से राजगद्दी तो भीमसिंह को ही मिलना चाहिए थी, परन्तु न जाने किस कारण राणा राजसिंह उससे अप्रसन्न रहा करते और अपने छोटे पुत्र जयसिंह को ही गद्दी देना चाहते थे। उसने इस बात पर कुछ भी विचार न किया कि जयसिंह को गद्दी देने पर दोनों भाइयों में कैसी भयङ्कर फूट और झगड़ा होगा और बहुत से लोग भीमसिंह के साथी बन कर खड़े हो जावेंगे और युद्ध में सहस्रों का विध्वंस हो जायगा।

जब रानी कमलकुमारी ने इस विषय में राणा को बहुत ऊँच नीच समझाया तब उसको चेत हुआ कि बड़े पुत्र के होते हुए छोटे को राज्य देना बिलकुल अन्याय है। गद्दी भीमसिंह को ही मिलनी चाहिए, यही विचार कर उन्होंने दूसरे दिन प्रातःकाल ही भीमसिंह को बुलवाया।

बुलाया जाने पर भीमसिंह अपने मन में कल्पना करने लगा—"आज यह नई बात कैसी? आज राणा ने मुझे क्यों बुलवाया है? क्या जयसिंह को राज्यासन पर बैठा कर मुझे उसका दास बनाना चाहते हैं? जब तक मेरी भुजाओं में बल है, जब तक मैं अपने हाथों में तलवार पकड़ सकता हूँ, तब तक तो मैं जयसिंह को राज्यसिंहासन पर बैठने न दूँगा।"

पिता के अन्याय-कर्म को सोच कर भीमसिंह के हृदय में क्रोध की आग भभक उठी। उसने मन में कहा—"मैं नहीं

कि "हमने भीमसिंह के साथ अन्याय और अधर्म किया है। उसका अधिकार उसी को देना चाहिए, वह अवश्य इस रा का अधिकारी है।" यही सोच कर भीमसिंह के नेत्रों आनन्द के आँसू भर आये।

१२–पिता की आज्ञा का पालन (२)

राणा ने कहा—"पुत्र, जो होना था सो हो गया, उस कुछ सोच मत करो। तुम्हारा अधिकार तुम्हीं को दे राज्यासन तुम्हीं को मिलेगा। परन्तु इस समय एक ब बड़ी कठिन आ पड़ी है।

जिस वस्तु पर जयसिंह का कुछ भी अधिकार न और न होना चाहिए, मेरे ही आश्रय से, मेरी ही भूल अब वह उसे अपनी समझने लगा है। यदि अब वह . राजगद्दी से निराश हो जायगा तो अवश्य उपद्रव मचा और अपने सहायकों को ले राज्य भर में उत्पात मचा दे व्यर्थ सहस्रों मनुष्यों की जान जाती रहेगी।

इसका केवल एक ही उपाय है। यह मेरी तलवार और इससे जयसिंह का सिर धड़ से पृथक् कर दो। एक हत्या से सहस्रों प्राणियों के प्राण बच जायंगे। मेरी यह आ पुत्र का तुम सोचो मत। न्याय यही चाहता है। न्याय सामने भाई, स्त्री, पुत्र कोई चीज़ नहीं।"

भीमसिंह चुप खड़ा राना की बातें सुन रहा था। उसको इतना अनुभव हो गया कि राना ने अपना हृदय पत्थर से भी कठिन कठोर बना लिया। यह अधिकार के लिए अपने प्रिय पुत्र के जीवन से भी हाथ धोना चाहता है। भीम-सिंह मन में अपने पिता की न्यायप्रियता की प्रशंसा करने लगा और मन ही मन विचार करने लगा कि मैं भी वह काम कर दिखाऊँगा कि जिससे इनके नाम पर कलङ्क न लगे।

राना ने उसे चुपचाप खड़ा देख कर कहा—"पुत्र, अधिक सोच विचार मत करो। इस हत्या में कुछ हानि नहीं। न्याय और देश के हित के लिए तुम यह काम अवश्य करो। यदि इसमें कुछ अपराध या पाप भी होगा तो मेरा होगा, तुम्हारा नहीं। जाओ, मैं आज्ञा देता हूँ, तुम जयसिंह को मार आओ।"

भीमसिंह ने राना की तलवार उनके चरणों के पास रख दी और हाथ जोड़ कर बड़ी नम्रता से कहा—"महाराज, मेरे साथ आपने जो अन्याय किया था उसका फल आपको मिल चुका। अब मैं वह काम करूँगा जिसमें जयसिंह की हत्या भी न हो और न उसकी या आपकी निन्दा हो। आपने तो मुझे राज्यासन देही दिया; अब मैं अपनी प्रसन्नता से जयसिंह को फिर राज्यासन देता हूँ। आज से यही राजा होगया। कदा-चित् यहाँ रहने पर भूल से भी राज्य का लोभ मेरे चित्त में उत्पन्न हो जाय, इस कारण, लीजिए, मैं इसी दम मेवाड़ को छोड़े देता हूँ। यदि मैं कभी अपनी प्रतिज्ञा को भंग करूँ तो

कोई चीज खो गई है ?" दोस्तमुहम्मद ने कहा—"हाँ, मेरी रुपयों की थैली खो गई है।" लड़के ने उसकी थैली उसे देकर कहा—"देखिए यही तो नहीं है ?" काबुली ने कहा—"हाँ यही है।" थैली लेकर वह वहीं बैठ कर रुपये गिनने लगा।

सब रुपये पूरे निकले तब आश्चर्य में होकर उसने कहा—"तुमको इतने रुपयों का कुछ भी लोभ न हुआ।" लड़के ने कहा—"बचपन से ही मुझे यह शिक्षा दी गई है कि 'पराये द्रव्य को ठीकरी के समान समझना चाहिए'।" लड़के की बात सुन कर उसकी सच्चाई के लिए काबुली बड़ा प्रसन्न हुआ और मन में कहने लगा—"ऐसे सत्यवादी और निर्लोभ पुत्र को पाकर इसके माता-पिता न जाने कितने प्रसन्न होते होंगे।'

काबुली उस लड़के को पाँच रुपये देने लगा। लड़के ने कहा—"मैंने तो पारितोषिक पाने के योग्य कोई काम नहीं किया। आपकी वस्तु आपको सौंप दी। यह तो करना उचित ही था।"

काबुली ने यह सब समाचार एक अँगरेज़ी समाचारपत्र में छपा दिया। उसमें उसने यह भी लिखा था कि ये रुपये मेरे नहीं बल्कि मेरे स्वामी के थे। यदि लड़का रुपये दबा बैठता तो मुझे कारागार में जाना पड़ता। लड़के ने मेरे साथ जितना उपकार किया है उसे मैं लिख नहीं सकता। मैं जीवन भर उसका यह उपकार कभी न भूलूँगा। मैं परमेश्वर से यही मनाता हूँ और सदा मनाता रहूँगा कि वह लड़का सदा सुखी रहे।

कहा—"भाई, मैं तो जानता था कि ये बातें ठीक हैं, परन्तु मैंने सोचा कि यदि मैं सरदार के कहने से न काटूँगा तो उसका चित्त दुःखी होगा। इस कारण उसके सामने काट दिया था, अब फिर ठीक कर दिया।"

नासिरुद्दीन बड़ा दयालु था। जब किसी को दुःखी देखता तभी उसका हृदय दया से भर आता था। भारतवर्ष का बादशाह होने पर भी यहाँ के टूटे फूटे झोपड़ों में रहनेवाले दीन जनों का यह बड़ा ध्यान रखता था। इन्हीं कारणों से सारी प्रजा जी से उसकी प्रतिष्ठा करती थी और उसके लिए प्राण न्योछावर करने को सदा तैयार रहती थी।

उसको अपने राजा होने का बड़ा ध्यान था। उसने अच्छी तरह सोच लिया था कि राज्यकार्य बड़ा कठिन है। वह जानता था कि एक दिन अपने स्वामी के सामने जो सब बादशाहों का बादशाह है, जाना और हिसाब देना होगा। इसी लिए उसने राज्य के पीछे अपने सारे सुख-चैन को तिलांजलि दे दी थी।

उसके एक ही बेगम थी। वही अकेली अपने घर का सब काम-काज किया करती थी। भोजन भी वही स्वयं बनाती थी। एक दिन भोजन बनाते समय उसका हाथ जल गया। उसने नासिरुद्दीन से बड़ी नम्रता से इतना कहा—"भोजन बनाने के लिए एक दासी होती तो अच्छा था।"

नासिरुद्दीन ने कहा—"बेगम, यह तो तुमको मा-

ही है कि मैं पुस्तकें लिख लिख कर बेचता और उसीसे अपना पेट पालता हूँ। उसकी आमदनी इतनी भी नहीं होती कि हम तुम अच्छी तरह खा पी सकें। फिर भला दासी कहाँ से रख सकता हूँ।

रहा कोश। उसमें मेरा एक पैसा भी नहीं। वह तो प्रजा का है। उसी के सुख और लाभ के कामों में लगाया जा सकता है। यदि मैं आज उसमें से एक पैसा भी लेलूँ तो कल ईश्वर को क्या उत्तर दूंगा। जिस प्रकार हो सके, यह कष्ट सहो, ईश्वर तुमको इसका फल देगा।"

१६—सवाई जयसिंह

औरंगज़ेब और महाराजा जयसिंह में किसी कारण अनबन हो गई। औरंगज़ेब ने बहुतेरा चाहा कि महाराज से बदला लें, पर वे अपनी बुद्धिमानी से उसके हाथ न आये। उनके मरने पर बादशाह ने उनके लड़के को पकड़वा मँगाया। राजकुमार अभी तक विद्या ही सीखने में लगे थे और संसार के व्यवहार न जानते थे। चलते समय उनके भाई बन्धों ने अपनी अपनी समझ के अनुसार बादशाह के प्रश्नों के उत्तर बताये। राजकुमार ने कहा "जो बादशाह इनमें से एक भी बात न पूँछे तो क्या उत्तर दूँ?" उनकी माँ ने कहा "बेटा! अपनी समझ से उत्तर देना, ईश्वर तुम्हारा भला ही करेगा"। जब राजकुमार

कहा—"भाई, मैं तो जानता था कि ये बातें ठीक हैं, परन्तु मैंने सोचा कि यदि मैं सरदार के कहने से न काटूँगा तो इसका चित्त दुखी होगा। इस कारण उसके सामने काट दिया था अब फिर ठीक कर दिया।"

नासिरुद्दीन बड़ा दयालु था। जब किसी को दुःखी देखता तभी उसका हृदय दया से भर जाता था। भारतवर्ष का बादशाह होने पर भी यहाँ के टूटे फूटे झोपड़ों में रहनेवाले निर्धन जनों का वह बड़ा ध्यान रखता था। इन्हीं कारणों से सब प्रजा जी से उसकी प्रतिष्ठा करती थी और उसके लिए प्राण न्योछावर करने को सदा तैयार रहती थी।

उसको अपने राजा होने का बड़ा ध्यान था। उसने अच्छी तरह सोच लिया था कि राज्यकार्य्य बड़ा कठिन है। वह जानता था कि एक दिन अपने स्वामी के सामने जो सब बादशाहों का बादशाह है, जाना और हिसाब देना होगा। इसी लिए उसने राज्य के पीछे अपने सारे सुख-चैन को तिलांजलि दे दी थी।

उसके एक ही बेगम थी। वही अकेली अपने घर के सब काम-काज किया करती थी। भोजन भी वही स्वयं बनाती थी। एक दिन भोजन बनाते समय उसका हाथ जल गया। उसने नासिरुद्दीन से बड़ी नम्रता से इतना कहा—"भोजन बनाने के लिए एक दासी होती तो अच्छा था।"

नासिरुद्दीन ने कहा—"बेगम यह तो तुम्हें म-

ते हैं कि मैं इसमें लिख लिख कर पैसा और रुपये कमाता पेट पालता हूँ। उनको मालूम भी नहीं होगा कि इस हम अपना काम तक तो कर ली। फिर भला दूसरों कहाँ से दे सकता हूँ।

भला मैं तो इसमें मेरा एक पैसा भी नहीं। यह तो इसका था है। इसी के सुख और [illegible] के कामों में लगाया जा सकता है। यदि मैं आज इसमें से एक पैसा भी लेलूँ तो कल ईश्वर को क्या उत्तर दूंगा। जिस प्रकार हो सके, यह काम करो, ईश्वर तुमको इसका फल देगा।"

१६—सवाई जयसिंह

औरंगज़ेब और महाराजा जयसिंह में किसी कारण अनबन हो गई। औरंगज़ेब ने बहुतेरा चाहा कि महाराज से बदला लें, पर वे अपनी बुद्धिमानी से उसके हाथ न आये। उनके मरने पर बादशाह ने उनके लड़के को पकड़वा मँगाया। राजकुमार अभी तक विद्या ही सीखने में लगे थे और संसार के व्यवहार न जानते थे। चलते समय उनके भाई बन्धों ने अपनी अपनी समझ के अनुसार बादशाह के प्रश्नों के उत्तर बताये। राजकुमार ने कहा "जो बादशाह इनमें से एक भी बात न पूँछे तो क्या उत्तर दूँ?" उनकी माँ ने कहा "बेटा! अपनी समझ से उत्तर देना, ईश्वर तुम्हारा भला ही करेगा"। जब राजकुमार

बादशाह के सामने पहुँचे तब बादशाह ने उसके दोनों हाथ पकड़ कर लाल पीली आँखें करके कहा "तेरे बाप ने मेरे साथ बहुत सी बुराइयाँ की हैं, बोल, मैं उनके पलटे में तुझे क्या दण्ड दूँ ?" राजकुमार ने बड़ी नर्मी से उत्तर दिया "हुजूर ! ब्याह में कन्यादान के समय पुरुष स्त्री का एक ही हाथ पकड़ता है और उस लाज के मारे उसका जन्म भर निर्वाह करता है। आप ने तो मेरे दोनों हाथ पकड़े हैं, अब मुझे क्या डर है !" औरंगजेब इस बुद्धिमानी के उत्तर से प्रसन्न हुआ और बहुत सा धन अपने पास से देकर उसका नाम "सवाई जयसिंह" रक्खा। सत्य है, विद्या में बड़ा बल है।

१७—सच्ची मित्रता

अकबर बादशाह का नाम तो तुमने सुना ही होगा। भारतवर्ष में अकबर बादशाह के समान प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध बादशाह दूसरा कोई नहीं हुआ। एक बार अकबर का पिता हुमायूँ पठानों के सरदार शेरशाह से कन्नौज के पास युद्ध में हार गया। हार कर वह वहाँ से ईरान की ओर प्राण बचा कर भाग निकला। उसकी भारी सेना उसके सब कर्मचारी, छिन्न भिन्न हो गए [illegible] भाग गया कोई कहीं।

[illegible] सरदार हुमायूँ का बड़ा स्नेही [illegible] अपने प्राण बचा कर भाग निकला। वह सब

को राक्षस के समीप भोजन ले जाना [illegible] कुन्ती ने उनको कह सुनाया।

राक्षस के साथ लड़ने के लिए भीमसेन का [illegible] जाना सुन कर युधिष्ठिर को बड़ी चिन्ता हुई। उनके मुख पर उदासी छा गई। वे मन ही मन इस विषय में [illegible] मनाने लगे। उन्होंने कहा— "भीम को इस तरह न भेजना चाहिए था।"

युधिष्ठिर को चिन्ता में पड़ा देख कर कुन्ती ने कहा— "पुत्र, तुम चिन्ता न करो। भीम के बल को मैं जानती हूँ कि कितना है। तुम नहीं जानते। मुझको उसके पराक्रम पर पूरा भरोसा है। वह अवश्य उस राक्षस को मार कर सकुशल यहाँ आ जायगा।

प्रत्येक मनुष्य को उचित है कि जो किसी को कष्ट में देखे तो जहाँ तक हो सके उसकी सहायता करे। जो मनुष्य दूसरों के दुःख में सहायता करते हैं परमेश्वर सदा उनकी सहायता करता है। तुम घबराओ मत। मैंने जो भीम को भेजा है तो ब्राह्मण और उसके बाल-बच्चे के प्राण बचाने के लिए भेजा है।

मुझे यह दृढ़ विश्वास है कि परमेश्वर उसकी अवश्य सहायता करेगा। उस राक्षस के मारे जाने से सारे नगर-निवासियों के प्राण बच जायँगे।"

ये बातें हो ही रही थीं कि इतने में राक्षस को मार कर भीमसेन लौट आया। भीमसेन ने राक्षस को मार तो

पर लड़के ने उसका ठीक ठीक मूल्य बता दिया। ग्राहक ने थैले से दाम निकाल कर उसके सामने रख दिया।

लड़का जब कपड़े की तह करने लगा तब देखा तो कपड़ा एक जगह से फटा हुआ था। यह देख कर उसने ग्राहक से कहा—"भाई देख लो, अभी कह देना अच्छा है, कपड़ा यहाँ पर तनिक सा फटा हुआ है। मैं तुमको बताये देता हूँ। पीछे से यह न कहना कि लड़के ने मुझे धोखा दे दिया।"

ग्राहक ने देख कर कपड़ा लौटा दिया और अपने दाम फेर लिये।

वहीं पर दूकानदार भी बैठा हुआ ये बातें सुन रहा था। लड़के की बात सुन कर वह बहुत बिगड़ा। उसने तत्काल उसके पिता को बुलाया और उससे कहा—

"तुम्हारा लड़का बड़ा अयोग्य और मूर्ख है। दुकानदारी के काम का नहीं है। यह माल बेचना नहीं जानता। यह काम ग्राहक का है कि माल के अच्छे बुरे की परख कर ले। दुकानदार का यह काम नहीं कि माल में जो कुछ बुराइयाँ हों सो ग्राहक से कह दे।"

दुकानदार की बातें सुन कर लड़के के पिता ने कहा—"क्यों भाई, लड़के ने यही एक अयोग्यता और मूर्खता का काम किया है या कोई और भी?"

दुकानदार ने कहा—"नहीं, और कोई अयोग्यता और

का कोमल हृदय पिघल गया। उनका भी जी भर आया उन्होंने अपने आँसू रूमाल से पोंछे।

२६—महाराजा रामसिंह और एक बुढ़िया की कहानी (२)

बुढ़िया को यह तो मालूम था ही नहीं कि मैं महाराज रामसिंह से ही बातें कर रही हूँ। थोड़ी देर में जब जयपुर का विषय छिड़ा तब वह कहने लगी—"क्यों बेटा, क्या यह सच है कि राजा रामसिंह बड़े दयालु हैं?"

राजा ने कहा—"सुनता तो मैं भी ऐसा ही हूँ। कहो तो तुमको एक दिन उनसे मिला दूँ?" इस पर बुढ़िया ने कहा—"बेटा क्या कहते हो? कहाँ हो? कैसी बातें कर रहे हो? राजा से मिलना भी क्या कोई खेल है? और फिर उन की मोहर भेंट करने के लिए चाहिए। मेरे पास मोहर कहाँ! भला तुम्हीं बताओ मैं राजा से क्योंकर मिल सकती हूँ। मिलना तो अलग रहा कहीं ऐसा न हो कि सिपाहियों के हाथ मेरा सिर उड़वा दिया जाय।"

इस समय तो महाराज ने उससे कुछ न कहा [illegible]

अगले दिन प्रातःकाल होते ही महाराजा ने उस लड़के को दुर्ग में ढुंढवाया। जब वह आया तब महाराजा ने बुढ़िया माता को थोड़ी राह आने के लिए उसे खूब भला बुरा कहा और बुढ़िया के बुलाने के लिए डोली भेजी।

जब बुढ़िया आई तब सिपाहियों ने महाराजा की आज्ञा से उसे महल के भीतर जा उतारा। बुढ़िया महाराजा के सामने जाना न चाहती थी मारे डर के वह थर थर कांपने लगी।

जब महाराजा आपही उसके सामने आ खड़े हुए तब बुढ़िया ने जाना कि जिस थके हुए सिपाही को मैंने कल पानी पिलाया था, वह महाराजा रामसिंह बहादुर ही थे।

बुढ़िया हाथ जोड़ कर खड़ी होगई। महाराजा ने उसे दाढ़स दिया और कहा—"माई डरो मत।" राजा का इतना कहना था कि बुढ़िया का सारा भय जाता रहा।

उस सज्जन और दयालु राजा ने इतना ही नहीं किया, बल्कि बुढ़िया को आयु भर के लिए पचास रुपया मासिक सहायता बांध दी और उसके पुत्र का भी मासिक वेतन बढ़ा दिया।

प्रिय भैयो तुमको भी इसी प्रकार दीन जनों पर दया दिखानी चाहिए।

३०—क्रोध

क्रोध बड़ी बुरी चीज़ है। यह मनुष्य का बड़ा भयङ्कर शत्रु है। जो मनुष्य क्रोध को जीत लेता है, उसको वश में कर लेता है, वही सच्चा शूरवीर और वही सच्चा पराक्रमी है।

क्रोधी मनुष्य कभी शान्ति से नहीं बैठता। उसको कभी सुख नहीं मिलता। क्रोध करना अथवा किसी से बदला लेना बहुत ही बुरी बात है। संसार में नित्य अनेक बातें ऐसी हुआ करती हैं जो हमें अच्छी नहीं लगतीं। यदि हम उन बातों पर बार बार क्रोध करते रहें तो हमारा जीवन बड़ा कठिन हो जाय।

आग पहले उसी पदार्थ को भस्म करती है जिसमें लगती है, इसके बाद वह अन्य पदार्थों को जलाती है। इसी प्रकार क्रोधरूपी अग्नि से भी पहले क्रोध करने वाले का ही शरीर भस्म होता है। जिस पर क्रोध आता है उसकी अपेक्षा क्रोध करने वाले की ही अधिक हानि होती है।

क्रोध आने पर कुछ काल ठहर कर विचार कर लेना चाहिए कि उसका परिणाम क्या होगा। उस समय जल्दी में कोई बुरा काम न कर बैठना चाहिए। उस समय चित्त को किसी दूसरी ओर ले जाना चाहिए। क्रोध के समय थोड़ा शीतल जल पी लेने से भी क्रोध कम हो जाता है।

क्रोध भी एक प्रकार का ज्वर है। ज्वर के वेग में

कि बुढ़िया के झोंपड़े से जो धुआँ निकलता है उससे दीवारें काली हो जाती हैं तो मैंने बुढ़िया से कहा कि धुआँ क्यों करती है? उसने कहा— मैं अपने लिए भोजन बनाती हूँ, इसलिए धुआँ निकलता है।"

मैंने कुछ न कहा और अच्छे अच्छे भोजन तैयार करा कर उसके खाने के लिए भेज दिये और कहला भेजा कि इसी प्रकार प्रति दिन मेरे लिए भोजन आ जाया करेगा। तू इस झोंपड़ी में आग न जला। क्योंकि इसके धुएँ से दीवारें काली हो जाती हैं।

उसने कहला भेजा—"भला यह कैसे हो सकता है कि संसार में सैकड़ों प्राणी तो भूखे सो रहें और मैं पेट भर कर ऐसे अच्छे अच्छे भोजन पाऊँ? मैं परमपिता परमेश्वर से डरती हूँ कि स्वयं धन की अवस्था हो जाने पर अपनी भूखी दीनों को छोड़ कर दूसरे के दिये अच्छे अच्छे भोजन करूँ।"

इसके अतिरिक्त उसने यह भी कहा कि मेरा झोंपड़ा रहने दे। तेरे बड़े बड़े कर्मचारी जब देखेंगे कि तू [illegible] एक बुढ़िया का झोंपड़ा भी नहीं लेता तो वे भी प्रजा पर ज़ुल्म न करेंगे। महल भी तेरा बहुत दिन न रहेगा परन्तु मैं इस झोंपड़े की कथा चिरकाल तक बनी रहेगी।

करें। परन्तु रघुपतिसिंह का हृदय उस समय पुत्र-दर्शन की लालसा से विह्वल हो रहा था। इसलिए वह साथियों के कहने को सुना अनसुना करके घर की ओर चल ही दिया।

रघुपतिसिंह जब सायङ्काल के समय अपने नगर में पहुँचा तब देखा कि समस्त नगर में सन्नाटा छाया हुआ है। घर के द्वार पर जाते ही पहरे वाले ने टोका—"कौन?" रघुपतिसिंह ने निडर होकर कहा—"रघुपतिसिंह।"

पहरेवाले ने कहा—"बादशाह की आज्ञा है कि तुम जहाँ कहीं मिलो पकड़ लिये जाओ।"

रघुपतिसिंह ने कहा—"भाई, मेरा पुत्र बड़ा बीमार है। इस समय उसकी बड़ी बुरी दशा है। कुछ काल के लिए मुझे भीतर जाने दो। मैं अभी देख कर लौट आता हूँ। फिर तुम चाहे जो करना। स्मरण रहे कि मैं राजपुत्र हूँ, क्षत्रिय-सन्तान हूँ, असत्य कभी न कहूँगा।"

पहरेवाला सिपाही जब घर छोड़ कर बादशाह की सेना में भरती होने आया था तब उस समय उसका भी इकलौता पुत्र बहुत रोगी था। रघुपतिसिंह की करुणा-रस-भरी बातें सुनकर उसका भी हृदय पिघल गया। अपने पुत्र को याद करके उसने एक लम्बी साँस लेकर कहा—"भैया जाओ, देख आओ।"

जब रघुपतिसिंह भीतर गया तो देखा कि लड़का रोग के कारण विह्वल हो रहा है। उसकी माता उसकी खाट में

जायँ। परन्तु रघुपतिसिंह का हृदय उस समय पुत्र-दर्शन की लालसा से विकल हो रहा था। इसलिए वह साथियों के कहने को सुना अनसुना करके घर की ओर चल ही दिया।

रघुपतिसिंह जब सायङ्काल के समय अपने नगर में पहुँचा तब देखा कि समस्त नगर में सन्नाटा छाया हुआ है। घर के द्वार पर जाते ही पहरे वाले ने टोका—"कौन?" रघुपतिसिंह ने निडर होकर कहा—"रघुपतिसिंह।"

पहरेवाले ने कहा—"बादशाह की आज्ञा है कि तुम जहाँ कहीं मिलो पकड़ लिये जाओ।"

रघुपतिसिंह ने कहा—"भाई, मेरा पुत्र बड़ा बीमार है। इस समय उसकी बड़ी बुरी दशा है। कुछ काल के लिए मुझे भीतर जाने दो। मैं अभी देख कर लौट आता हूँ। फिर तुम चाहे जो करना। स्मरण रहे कि मैं राजपुत्र हूँ, क्षत्रिय-सन्तान हूँ, असत्य कभी न करूँगा।"

पहरेवाला सिपाही जब घर छोड़ कर बादशाह की सेना में भरती होने आया था तब उस समय उसका भी एकलौता पुत्र बहुत रोगी था। रघुपतिसिंह की करुणा-रस-भरी बातें सुनकर उसका भी हृदय पिघल गया। अपने पुत्र को याद करके उसने एक लम्बी साँस लेकर कहा—"अच्छा जाओ, देख आओ।"

जब रघुपतिसिंह भीतर गया तो देखा कि लड़का रोग के कारण विकट हो रहा है। उसकी माता उसकी खाट में

३४—प्रतिज्ञापालन (३)

इस घटना को हुए अभी कुछ ही समय बीता होगा कि सिपाहियों का सरदार कुछ सैनिकों को साथ लेकर उधर आ निकला। उसने आते ही पहरेवाले से कहा—"रघुपतिसिंह का क्या समाचार बताओ।"

न जाने रघुपतिसिंह के घर आने और फिर लौट जाने का समाचार उसे कहाँ से विदित हो गया था। पहरेवाले ने भी सब वृत्तान्त सच सच सुना दिया। सरदार ने रघुपतिसिंह के छोड़ देने के अपराध में पहरेवाले को बाँध कर कैद कर दिया और उनके द्वार पर दोहरा पहरा बैठा दिया।

रघुपतिसिंह को यह बात ज्ञात हो गई कि मेरे छोड़ देने-वाला कैद कर लिया गया है। यह सुन कर उससे न रहा गया। वह तुरन्त शत्रु के सरदार के पास आकर उपस्थित हो गया। रघुपतिसिंह और उस पहरेवाले सिपाही दोनों को मारने की आज्ञा हुई।

दूसरे दिन प्रातःकाल ही सिपाही और रघुपतिसिंह दोनों हाथ पाँव बँधे हुए सामने खड़े किये गये। उनके पास दो जल्लाद नङ्गी तलवार लेकर खड़े हो गये। वे आज्ञा की बाट देख ही रहे थे कि इतने में वहाँ पर उन सिपाहियों का सेनापति आ पहुँचा।

सेनापति ने रघुपतिसिंह की ओर उँगली उठा कर कहा—सिपाहियो, तुम जानते हो यह कौन है। यह रघुपतिसिंह है

१—कबीर की साखी

जो तोकूँ काँटा बुवै, ताहि बोइ तू फूल।
तोको फूल के फूल हैं, वाको हैं तिरसूल ॥ १ ॥
दुरबल को न सताइये, जाकी मोटी हाय।
मुई खाल की स्वाँस सों, सार भसम हो जाय ॥ २ ॥
या दुनिया में आइ के, छाँड़ि देइ तू पैंठ।
लेना है सो लेइ ले, उठी जात है पैंठ ॥ ३ ॥
ऐसी बानी बोलिये, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करै, आपौ शीतल होय ॥ ४ ॥
दया कौन पर कीजिये, का पर निर्दय होय।
साईं के सब जीव हैं, कीरी कुंजर दोय ॥ ५ ॥
जहाँ दया तहँ धर्म है, जहाँ लोभ तहँ पाप।
जहाँ क्रोध तहँ काल है, जहाँ छमा तहँ आप ॥ ६ ॥
साँच बरोबर तप नहीं, झूठ बरोबर पाप।
जाके हिरदय साँच है, ताके हिरदै आप ॥ ७ ॥
संगति कीजै साधु की, हरै और की व्याधि।
ओछी संगति क्रूर की आठो पहर उपाधि ॥ ८ ॥

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में परले होयगी, बहुरि करोगे कब ॥ ६ ॥
बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न दीखे कोय।
जो दिल खोजो आपना, मुझसा बुरा न कोय ॥१०॥

२८—कबीर की साखी

जिन खोजा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ।
हौं बौरी ढूँढन गई, रही किनारे बैठ ॥ १ ॥
साहब के दरबार में, कमी काहु की नाहिँ।
बंदा मौज न पावही, चूक चाकरी माहिँ ॥ २ ॥
साहब तुम न बिसारियो, लाख लोग मिल जाहिं।
हमसे तुमको बहुत हैं, तुमसे हमको नाहिँ ॥ ३ ॥
जाको राखै साइयाँ, मारि न सकिहैं कोय।
बार न बाँका करि सके, जो जग बैरी होय ॥ ४ ॥
साहब सों सब होत है, बंदे सों कछु नाहिँ।
राई सों पर्वत करे, पर्वत राई माहिँ ॥ ५ ॥
दुख में सुमिरन सब करें, सुख में करे न कोय।
सुख में जो सुमिरन करें, दुख काहे को होय ॥ ६ ॥
एकहि साधे सब सधे, सब साधे सब जाय।
जो तू सींचे मूल को, फूलै फलै अघाय ॥ ७ ॥

मेरा मुझ को कुछ नहीं, जो कुछ है सो तेरा।
तेरा तुझ को सौंपना, क्या लागे है मेरा ॥ ८ ॥
का मुख लै विनती करौं, लाज आवत है मोहिं।
तुम देखत औगुन किये कैसे भाऊँ तोहिं ॥ ९ ॥
माला फेरत जुग गया, पाय न मन का फेर।
कर का मनका छाँड़ि के, मन का मनका फेर ॥ १० ॥

३—श्रीलाल के दोहे

देबो यश को मूल है, याते देबो ठीक।
पर देबे में जानिये, दुख कबहूँ नहिं नीक ॥ १ ॥
संचय करिबो है भलो, सो आवे बहु काम।
पाप न संचय कीजिये, जो अपयश को धाम ॥ २ ॥
जड़ कबहूँ नहिं काटिये, काहू को मन धारि।
पारद अगुन को जड़ करो, भलो एक निरधारि ॥ ३ ॥
भलो होत नहिं मारिबो, काहू को जग माहिं।
भलो मारिबो कोप को, ना सम नररिपु नाहिं ॥ ४ ॥
जोरी करि नहिं रोकिये, काहू को मन मीत।
बने तो मन को रोकिये, ज्ञात होय विनीत ॥ ५ ॥
संग सदा सुख धाम है, करिये सज्जन देख।
कबहूँ न करिये दुष्ट का संग यही अवरेख ॥ ६ ॥

करे हिरस जो काहु की ता में लहै नर हान।
पर विद्या की हिरस कर जासों हो जग मान ॥ ७ ॥
प्रीति रीति दुख मूल है, मैं कीन्हों निरधार।
प्रीति भली भगवान की, जाते हो भवपार ॥ ८ ॥
भलो न जग में आस कोउ, आस दुःख को मूल।
पर गुरु पितु के आस तें, मिटै क्लेश को मूल ॥ ९ ॥
बुरो माँगिवो जगत में जाते हो अपमान।
पना माँगिवो ईश तें, भलो यही कर ज्ञान ॥ १० ॥

४–श्रम और संपत्ति

[मुकुन्दलाल शास्त्री-कृत शिक्षाकौमुदी से]

जे जग में श्रम तें विविध, विद्याधन चित लाइ।
संचहिँ करहिँ सुजान ते, सुख पावैं मन भाइ ॥ १ ॥
श्रम से विद्या पाइये, श्रम ही से धन होइ।
श्रम ही से सुख होत हैं, श्रम बिन लहे न कोइ ॥ २ ॥
श्रम ही से अधिकार पुनि, लहत मनुज अधिकाय।
बिन श्रम कारज होय नहिँ, श्रम से दुःख नसाइ ॥ ३ ॥
श्रमी पुरुष संपति लहैं, श्रमी सुयश अरु धाम।
श्रम ही से या जगत में ज्ञान लहै अभिराम ॥ ४ ॥
श्रम करि जे विद्या पढ़ें मनुज मान तजि आइ।
ते सुख लहैं अयास बिन संपति अवसर पाइ ॥ ५ ॥

जे नर श्रम नहिँ करत हैं आलस वश धन पाय।
अति दुख पावैं जगत में, संचित धन विनसाय॥६॥
श्रम पुनि बहु नहिं कीजिये बहु श्रम ते सुख हानि।
बहु श्रम तें रुज देह में होइ काज दुखखानि॥७॥
आलस कबहुँ न कीजिये, आलस अरि सम जान।
आलस से विद्या घटे, सुख संपति की हानि॥८॥
आलस से निज धर्म की, हानि होत दुख-मूल।
आलस से अनुकूल प्रभु होत सदा प्रतिकूल॥९॥
आलस है बिन रोग को, महारोग नरदेह।
आलस ही ते नसत हैं सुख संपति अरु गेह॥१०॥
संपति संचय कीजिये संपति से सुख जान।
संपति से जग में सुयश, संपति धर्मनिदान॥११॥
संपति से गुरुता मिले, सब जग वश में होइ।
संपति से सिध होत है इहि परलोकहु दोइ॥१२॥
संपति बिन कुलधर्म नहिँ, सिद्ध काज नहिँ होइ।
लहै दीनता जग विषे, दुखी होइ पुनि सोइ॥१३॥
संपति ही से शत्रु सब, वश में करत सुजान।
संपति से धीरज रहै, संपति से कुल मान॥१४॥
संपति से पितु मातु गुरु, बन्धु मित्र सम होइ।
बिनु संपति जग में पुत्र मित्र शत्रु सम होइ॥१५॥
संपति बिन गुरु शिष्य का मान मृतु तजि देहिँ।
बन्धु बन्धु दारा पुत्र मित्र शत्रु गनि लेहिँ॥१६॥

जो विचार विन करत हैं, ते पाछै पछितात।
तासों काज विचार कै, तबहिँ कीजिये तात ॥६॥
नृप सज्जन पण्डित धनी, नदी बैद निज जाति।
ये जा पुर में होयँ नहिँ तहाँ न बसिये राति ॥७॥
सुहृद बन्धु परदेश में, धन ताला के माहिं।
विद्या पुस्तक मध्य ये, समय सम्हारैं नाहिँ ॥८॥
मित्र सोइ जो कपट बिन, बन्धु सोइ हित होय।
देस सोइ जहँ जीविका, मन रुचि कर तिय सोय ॥९॥
लाख मूर्ख तजि राखिये, इक पण्डित बुधि धाम।
सर शोभा इक हंस सों, लाख काक किहि काम ॥१०॥
राजा पण्डित तुल्य नहिं, जानहु नर सिरताज।
पण्डित पूज्य जहान में नृपति पूज्य निज राज्य ॥११॥
तब लों मूरख बोलहीं, जब लों पण्डित नाहिं।
जब लों रवि नभ नहि उदय तबलों नखत दिखाहिं ॥१२॥
हंस न बक में सोहई तुरग न रासभ माहिं।
सिंह न सोहै स्यार में, विज्ञ मूर्ख में नाहिं ॥१३॥
धन ते विद्या धन बड़ो, रहत पास सब काल।
देय जितो बाढ़ै तितो, छीन न लेइ नृपाल ॥१४॥
शत्रु नहीं कोउ रोग सम, सुत सम नहिं कोउ मीत।
भाग सरिस कोउ बल नहीं विद्या सम नहिं मीत ॥१५॥
सब परतिय जिहि मातु सम सब पर-धन जिहि धूर।
सब जीवन निज सम लखै सो पण्डित भरपूर ॥१६॥

नियहिं बाल पुत्रहिं पिता शिष्यहिं गुरु उदार ।
स्वामि सेवकहिं देवता, यह श्रुति-मत निर्धार ॥१७॥
करिये विद्यादत्त को, सेवन अरु सत्यास ।
तासों आशहिं अमित गुन, अवगुन होहिं विनाश ॥१८॥
घनी बात विगरै तुरत, विगरी बनै न तात ।
कांच कलस फोरिय पटकि, पुनि न जुरै कोउ भांति ॥१९॥
कबहुँ नम्र नहिं मूर्ख जन, नमत सुबुध अघतंस ।
आम डार फल सह नमत, नमत न निष्फल बंस ॥२०॥
प्रान जाय ताे जाय पै, नहीं दुष्ट हठ जाय ।
जरी बरी रसरी तदपि, ऐंठन प्रकट लखाय ॥२१॥
काढ़े तेल पखान सों, फूल बेत के माहिं ।
ऊसर में अंकुर कढ़ै, पै खल में गुन नाहिं ॥२२॥
जो मूरख निन्दा करै, पण्डित को नहिं हानि ।
रवि पर धूर उड़ाय है, परै अपुन सिर आनि ॥२३॥
सत संगत में वास सों, अवगुन हूँ छिपि जात ।
अहिर धाम मदिरा पिवे, दूध जानिये तात ॥२४॥
असत संग के वास सों, गुन अवगुन है जात ।
दूध पिवै कलवार घर मदिरा सबहिं बुझात ॥२५॥
सबकी ओषधि जगत में, खल की ओषधि नाहिं ।
चूर होहिं सब ओषधी, परि के खल के माहिं ॥२६॥
दूजे को उत्कर्ष नहिं देखि सकत जग नीच ।
परनिन्दा सुनि के मुदित सो पापी अति नीच ॥२७॥

सदा छली सों डरिय जिय, करिये नहीं विश्राम।
ये सर्वस मोचन करत, समय पाय रहि पास ॥२८॥
विद्या होवै नीच पै, लीजै बिना विचार।
धन कठोर सों लीजिये, घरकुल सों तिय धार ॥२९॥
विद्यावन्तहि चाहिए, पहिले धर्म विचार।
तासों दोऊ लोक को, सधत शुद्ध व्यवहार ॥३०॥

६—विनय के दोहे

प्रातहि उठि के नित्त नित, करिये प्रभु को ध्यान।
जाते जग में होय सुख, अरु उपजै मनज्ञान ॥१॥
काहू तें कड़ुयो बचन, कहौ न कबहुँ जान।
तुरत मनुज के हृदय में, छेदत है जिमि बान ॥२॥
पढ़िबे में कबहुँ नहीं, नागा करिये चूक।
कुपढ़ लोग माँगत फिरहिं, सहहिं निरादर भूक ॥३॥
कबहुँ न चोरी कीजिए, यदपि मिलै बहु वित्त।
नर फँस ताके फन्द में, पावहिं लाज अमित्त ॥४॥
मीठी बोली बोलिए, करके सब सों प्रीति।
करैं प्रेम तासों सकल, लखि शुक सारिक रीति ॥५॥
यदपि होत पितु मातु को, सब सुत पै सम नेह।
लखि सुपूत उमड़त लहै जग कुसुत लखि देह ॥६॥

जानि सबै गति ईश की करै न कबहुँ पाप।
लखहि चराचर जगत को, देखत है वह आप ॥७॥
सुन के दुर्जन के वचन, हो रहिये चुपचाप।
करै जो समता तासु की नीच कहावै आप ॥८॥
झूठे कबहुँ नहि बोलिये, झूठ पाप कर मूल।
झूठे को कोउ जगत मे, कर प्रतीति न भूल ॥९॥

७–रामचन्द्र का गेंद खेलना

[रामचन्द्रिका से]

एक काल अति रूप निधान
खेलन को निकरे चौगान।
हाथ धनुष अति सुन्दर रूप,
संग लिये सब सोदर भूप ॥
पौथी सब अलवारिन भरी
हय हाथिन सों सोहत खरी।
तरु-पुंजन सों सरिता भली:
मानों मिलन समुद्रहि चली ॥
यहि विधि गये राम चौगान:
सावकाश सब भूमि समान।
शोभत एक कोस परिमान:
रच्यो रुचिर तापर चौगान ॥

एक कोद रघुनाथ उदार।
भरत दूसरे कोद विचार।
सोहत हाथे लीन्हें छरी।
कारी, पीरी, लाली, हरी॥
देखन लगे सब जग-जाल,
डारि दियो भुव गोला हाल।
गोला जाइ जहाँ जहँ जबै,
होत तबै तितहीं तित सबै॥
गोला जाके आगे जाय,
सोई ताहि चलै अपनाय।
याके मन अति आनन्द होय,
कहो सुनो मानै नहिं कोय॥
इतते उत उतते इत होय,
नेकहुँ ढील न पावै सोय।
क्रोध, मोह, मद मढ्यो अपार,
मानौं जीव भ्रमै संसार॥
जहाँ तहाँ मारे सब कोय,
ज्यों नर धर्म-विरोधी होय।
घरी घरी पर ठाकुर सबै,
बदलत आसन, वाहन तबै॥
जब जब जीतैं हाल हरि, तब तब बजत निशान।
हय गज भूषण भूरि पट, दीजत लोगन्ह दान॥

८—वृन्दविनोद सतसई

उत्तम जन के संग में सहजे होय सुख भास।
जैसे नृप लावै इतर, लेत सभाजन बास ॥१॥
होय शुद्ध मिटि कलुषता, सत्संगति को पाय।
जैसे पारस को परस लोह कनक ह्वै जाय ॥२॥
स्वारथ के सबही सगे, बिन स्वारथ कोउ नाहिं।
जैसे पंछी सरस तरु निरस भये उड़ि जाहिं ॥३॥
कुल बल जैसो होय सो, तैसी करिहै बात।
बनिक-पुत्र जानै कहा, गढ़ लेवे की घात ॥४॥
अपनी पहुँच बिचारि के करतब करिये दौर।
तेते पाँव पसारिये जेती लाँबी सौर ॥५॥
कैसे निबहै निबल जन, करि सबलन सों बैर।
जैसे बस सागर विषै, करत मगर सों बैर ॥६॥
विद्या धन उद्यम बिना कहु सुख पावै कौन।
बिना डुलाये ना मिलै, ज्यों पंखा की पौन ॥७॥
रोस मिटै कैसे कहत, रिस उपजावन बात।
ईंधन डारे आग मों, कैसे आग बुझात ॥८॥
देवो अवसर को भलो, जासों सुधरै काम।
खेती सूखे बरसिबो धन को कौने काम ॥९॥
दुष्ट न छाँड़े दुष्टता, कैसे हूँ सुख देत।
धोये हूँ सौ बेर के, काजर होय न सेत ॥१०॥

६—वृन्दविनोद सतसई

जो जाको गुन जानही, सो तेहि आदर देत।
कोकिल अम्बहि लेत है, काग निबौरी हेत ॥१॥
जो पावै अति उच्च पद, ताको पतन निदान।
ज्यों तपि तपि मध्याह्न लौं, अस्त होत है भान ॥२॥
जो चाहे सोई लहै, यों सुख होय शरीर।
ज्यों प्यासे जिय को मिले, निर्मल शीतल नीर ॥३॥
जाको जहँ स्वारथ सधै, सोई ताहि सुहात।
चोर न प्यारी चाँदनी, जैसे कारी रात ॥४॥
प्रकृति मिले मन मिलत है, अनमिल ते न मिलाय।
दूध दही ते जमत है, काँजी ते फटि जाय ॥५॥
जो समर्भै जिहि बात को, सो तिहि कहै विचार।
रोग न जानै ज्योतिषी, वैद्य ग्रहन की चार ॥६॥
मूरख को पोथी दई, बाँचन को गुन गाथ।
जैसे निर्मल आरसी, दई अंध के हाथ ॥७॥
नयना देत बताय सब, हिय को हेत अहेत।
जैसे निर्मल आरसी, भली बुरी कहि देत ॥८॥

चाहिए. मेरे हाथ में से काट लीजिए, और जैसे बने वैसे मे
प्यारी बहन को जल्दी नीरोग कर दीजिए।" डाक्टर सा
इस बात को बालभाषण समझ कर हँसते हुए चले गये। पर
लड़की ने जो कहा था, मन से कहा था और वह उस
लिए तैयार थी।

दूसरे दिन जब डाक्टर साहब फिर आये तब फिर उन्हें
वही बात कही। उस दिन भी सब चुप साधे बैठे रहे। पर
लड़की बार बार डाक्टर से यही कहती थी—"लीजिए, मे
चमड़ा काट कर लगा दीजिए। अन्त को डाक्टर ने घरवा
की सम्मति से दो बार करके दो रुपये के बराबर उसके हाथ
चमड़ा काट कर उसकी बहन के घाव पर लगा दिया।

उचित तो यह था कि चमड़ा काटते समय डाक्टर उ
लड़की को औषध सुँघा कर अचेत कर देते, परन्तु उस
साहस देख कर उन्होंने उसके अचेत करने की आवश्यकता
समझी। वह बालिका अपनी बहन को इतना अधिक चाह
थी कि चमड़ा काटने के शस्त्र को देख कर तनिक भी न वि
लित हुई और चुपचाप बैठी रही। सात वर्ष की बालिका
यह साहस क्या प्रशंसनीय नहीं है?

२—डाकू और साधु

किसी जङ्गल में एक साधु रहता था। वह बड़ा दय

और लाखों रुपये मेरे पास हैं। आप जिस काम के करने की मुझे आज्ञा देंगे मैं उसके करने में ढील न करूँगा।"

डाकू की ये बातें सुन कर साधु उसको एक पहाड़ के नीचे ले गया। वहाँ ले जाकर साधु ने उसको तीन बड़े बड़े पत्थर दिखाये और कहा—"इनको उठा लो और पहाड़ पर मेरे साथ चलो।"

डाकू ने जैसे तैसे पत्थर उठा तो लिये परन्तु उन्हें लिये हुए वह पहाड़ पर न चढ़ सका। तब उसने साधु से कहा—"इन पत्थरों को लिये हुए तो मुझसे ऊपर न चढ़ा जायगा"। साधु ने कहा—"अच्छा, इनमें से एक फेंक दो।" डाकू ने एक पत्थर फेंक दिया। परन्तु फिर भी कुछ दूर चल कर वह हाँफने लगा और थक कर बैठ गया।

उसको थका हुआ देख कर साधु ने दूसरा पत्थर भी फेंकने की आज्ञा दे दी। दूसरा पत्थर फेंक कर एक ही पत्थर को लिये हुए डाकू पहाड़ पर चढ़ने लगा परन्तु फिर भी पत्थर लेकर पहाड़ पर दूर तक वह न जा सका। तब साधु ने कहा—"अच्छा तीसरा पत्थर भी फेंक दो।" फिर क्या था, डाकू हलका होकर झट से पहाड़ के शिखर पर पहुँचा वहाँ पहुँच कर डाकू ने साधु से कहा—"अब मुझको वह काम बताओ।" साधु ने कहा—"जिस प्रकार तुम पत्थर लेकर पर्वत पर नहीं चढ़ सकते इसी प्रकार तुम्हारे सिर पर तीन भार लदे हुए हैं जिनको लिये हुए यश के उच्च पर्वत के शिखर पर

अपनी दाई पन्ना की संरक्षता में महलों में रहता था। एक दिन जैसे ही पन्ना ने उदयसिंह को खिला पिला कर सुलाया, वैसे ही महल में कुछ रोने पीटने का शब्द सुनाई दिया। पन्ना ने नाई से जो उदयसिंह का जूठा उठाने आया था, पूछा—"यह कौन रोता है?" नाई ने घबरा कर कहा—"राना बनबीर ने विक्रमाजीत को मार डाला।"

इतना सुनते ही पन्ना थर थर कांपने लगी। वह सोचने लगी कि बनबीर ने जब विक्रमाजीत को मार डाला, तब उदयसिंह को कब जीता छोड़ सकता है? उदयसिंह के जीवित रहने पर सदा उसे यही शंका बनी रहेगी कि बड़ा होकर कहीं यह उससे राज न छीन ले।

पन्ना यह सोच ही रही थी कि इतने में किसी के पाँव की आहट सुनाई दी। यह समझ कर कि कहीं बनबीर ही न हो पन्ना ने अपना हृदय कठोर करके उदयसिंह को तो उठा के एक कोने में छिपा दिया और अपने इकलौते पुत्र को उसकी शय्या पर सुला दिया। इतने में ही बनबीर नंगी तलवार लिये आ ही गया और पन्ना से पूछने लगा—"पन्ना, उदयसिंह कहाँ है?" उस समय बनबीर के मुंह से इतना सुनते ही मारे भय के पन्ना की घिग्घी बँध गई। उसने अपने पुत्र की ओर उँगली उठा दी। उसके उँगली उठाते ही बनबीर ने एक ही वार में बच्चे की हत्या कर डाली।

पन्ना के यही एक पुत्र था जो इस प्रकार मारा गया। पन्ना

हमको विदित करा देती है कि तुमने यह काम बुरा किया उसका फल तुमको अवश्य भोगना पड़ेगा।

इस शक्ति का मान हम जितना ही कम करते हैं, जितनी ही बात हम इसकी कम मानते हैं, उतनी ही अधिक यह निर्बल पड़ जाती है। जब हमारा स्वभाव ही अधर्म या कुकर्म करने का हो जाता है तब यह शक्ति ऐसी निर्बल पड़ जाती है कि किसी काम के अच्छे या बुरे होने का विचार तक हमको नहीं होता। परन्तु जो मनुष्य इस शक्ति का मान करते हैं और उसकी आज्ञा में रहते हैं उनको धर्म अधर्म या भले बुरे कामों की पहचान दिन दिन अधिक बढ़ती जाती है।

पहले एक बड़े प्रसिद्ध साधु हो गये हैं। उनके विषय में सुना जाता है कि जब वे छःही वर्ष के थे तब एक दिन किसी नदी के तट पर क्रीड़ा कर रहे थे। नदी के तट पर बहुत से कछुए पड़े हुए थे। बालकों का स्वभाव चञ्चल तो होता ही है, नटखटी जो सूझी तो एक पत्थर उठाया और इच्छा की कि मारें। इतने में ही किसी ने उनके हृदय में कहा —"हयँ! यह क्या करते हो? किसी को दुःख पहुँचाना अच्छा नहीं।"

यह सुनते ही पत्थर वहीं फेंक दौड़ते हुए वे अपनी माता के पास आये और सब वृत्तान्त सुना कर पूछने लगे—"क्यों माताजी मेरे अन्तःकरण में यह बात किसने कही?" उसकी माता बड़ी बुद्धिमती थी। आँखों में प्रेम के आँसू भर कर कहने लगी "वत्स जिसकी प्यारी बोली तुमने सुनी है वह भगवान

पानी के नीचे रख दिया। जब कटोरा भर गया और बादशाह ने पीना चाहा तभी बाज़ ने पर मार कर उसे गिरा दिया। बादशाह ने फिर कटोरा पानी से भरा और पीना ही चाहा था कि बाज़ ने फिर पर मार कर गिरा दिया। बादशाह प्यास से बड़ा व्याकुल था। उसने क्रोध में भर कर बाज़ को पृथ्वी पर पटक दिया। बाज़ पृथ्वी पर गिरते ही मर गया।

इतने में बादशाह का एक नौकर, जो पीछे रह गया था, आ पहुँचा। उसने आ कर देखा कि बाज़ मरा पड़ा है और बादशाह प्यास से व्याकुल हो रहा है। नौकर ने गिलास निकाल कर अपनी सुराही में से पानी भर कर बादशाह के सामने किया। बादशाह ने कहा—'जो निर्मल जल इस झरने में से टपक रहा है ऊपर जा कर उसका एक गिलास भर लाओ।"

नौकर पहाड़ पर गया, तो क्या देखा कि एक बहुत छोटे सोते से थोड़ा थोड़ा पानी निकल रहा है और उस सोते पर एक मरा हुआ अजगर साँप पड़ा है। उसके मुँह से जो विषैली राल बहती है वह पानी में मिल कर बूँद बूँद करके टपक रही है।

यह देख कर नौकर ने बादशाह के पास आकर वहाँ का सारा वृत्तान्त सुना दिया। उसने बादशाह को सुराही का ही पानी पीने को दिया। बादशाह पानी पीता जाता था और उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बह रही थी।

नौकर ने रोने का कारण पूछा । बादशाह ने लम्बी साँस लेकर कहा—"मैंने व्यर्थ बाज़ को मार डाला । मैं क्या जानता था कि यह मेरी प्राणरक्षा के लिए पाली गई है । मैंने जल्दी में आकर बड़ा बुरा काम किया । बिना सोचे समझे कभी किसी को काम में जल्दी नहीं करनी चाहिए" ।

७—रेशम के कीड़े
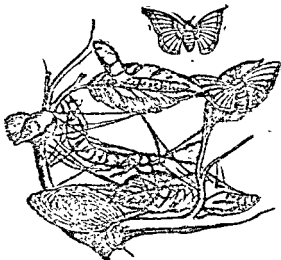
ईश्वर की दयालुता का अन्त नहीं है । छोटे से लेकर बड़े तक जितने पदार्थ हम इस संसार में देखते हैं उनसे मनुष्य का

कर, वे चीन में चारों ओर घूम कर अपने देश को लौट गये। वे केवल इतना ही जान सके कि रेशम कीड़ों से उत्पन्न होता है। कुछ काल के अनन्तर ईसाई धर्म्म के उपदेशक दो पादरी चीन को गये। कई वर्ष तक वे लोग भेस बदल कर चीन में फिरते रहे। अनेक प्रकार की युक्तियों से रेशम का सब काम उन्होंने यहाँ छिपे छिपे सीखा और रेशम के कीड़ों के बहुत से अंडे छड़ियों में भर कर ५५२ ईसवी में वे कॉस्टंटिनोपल को ले आये। यहाँ लाकर बादशाह के आज्ञानुसार शहतूत के बाग लगा कर उन्होंने वे अंडे फोड़े। तब से योरप में भी रेशम उत्पन्न होने लगा, और धीरे धीरे इटली, फ्रांस, इंगलेंड आदि देशों में रेशम के कारख़ाने खुल गये।

रेशम के कीड़ों की अद्भुत गति है। उनके रूप बदला करते हैं। उनके जितने रूप होते हैं वे सब पहले दिये गये चित्र में दिखलाये गये हैं। पहले एक लम्बा लम्बा कीड़ा होता है। उस समय उसका रूप एक और ही प्रकार का होता है। जब वह कुसियारी बनाना आरम्भ करता है और अपने चारों ओर रेशम के धागे निकाल कर अपने शरीर को बाँध सा लेता है तब वह कुछ और ही प्रकार का दिखाई देता है। जब उसकी कुसियारी आधी बन जाती है तब वह सिकुड़ कर बहुत छोटा हो जाता है। जब कुसियारी पूरी बन जाती है तब वह उसके भीतर हो जाता है और उसका कोई भी अंग नहीं दिखलाई देता। कुसियारी के भीतर कोई बीस दिन तक रह कर जब

जैसे जैसे वे मोटे होते हैं वैसे ही वैसे वे अपनी पुरानी खाल छोड़ दिया करते हैं। सब मिला कर उन्हें चार बार अपनी पुरानी खाल छोड़नी पड़ती है। चार बार खाल निकल जाने पर उनकी बाढ़ पूरी हो जाती है। उस समय उनकी लम्बाई तीन इञ्च तक होती है। उनके आठ जोड़ी पैर होते हैं और सात आँखें होती हैं। उनके शरीर में बहुत छोटे छोटे अठारह छेद होते हैं; उन्हीं से वे साँस लेते हैं। उनके पीछे एक छोटा सा काँटा होता है और शरीर भर में दस से लेकर बारह तक कँगूरे से होते हैं। जब वे जवान हो जाते हैं तब कुसियारी बनाना आरम्भ करते हैं। कुसियारी पूरी हो जाने पर बीस दिन के लगभग उसके भीतर रह कर वे बाहर निकल आते हैं। फिर वे अंडे देते हैं और देकर ही मर जाते हैं।

रेशम के कीड़े बहुत ही शीघ्र बढ़ते हैं। अंडों से निकलने के अनन्तर ४५००० कीड़े तौल में केवल आधी छटाँक होते हैं, परन्तु जिस समय वे जवान होते हैं उस समय ३५ ही कीड़े तौल में आधी छटाँक होते हैं। हिसाब लगाने से जाना गया है कि पाँच ही सप्ताह में रेशम का कीड़ा नौ हज़ार गुना तौल में अधिक हो जाता है !!!

आध सेर में कोई २४० कुसियारियाँ चढ़ती हैं, और हमारे देश की कोई १०००० कुसियारियों में लगभग आध सेर रेशम निकलता है। परन्तु यार और देशों में २४०० ही में आध सेर रेशम निकल आता है। एक कुसियारी के रेशम के धागों

ती। इसका लगभग आध गज़ का गज़ होता है। परन्तु कोई कोई किसी किसी कुरिन्दारी का धागा हज़ारों गज़ लम्बा होता है। धन्य उस ईश्वर की महिमा को कि जिसने एक छोटे से कीड़े को रेशम के समान मूल्यवान् वस्तु के इतने इतने लम्बे धागे बनाने की शक्ति दी।

८—महाभारत

हमारे देश में रामायण और महाभारत ये दो इतिहास के प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। इनमें से तुलसीदास की कृपा से रामायण तो घर घर में है और उसकी कथा भी प्रायः सब लोग जानते हैं, परन्तु महाभारत का उतना अधिक प्रचार नहीं है। इसलिए महाभारत में वर्णन की गई कथा हम यहां संक्षेप से लिखते हैं।

दिल्ली से ६० मील पर हस्तिनापुर नामक एक नगर था। उसमें कुरु राजा के वंश में शान्तनु नामक राजा हुआ। उसके तीन पुत्र थे। भीष्म, चित्राङ्गद और विचित्रवीर्य्य। भीष्म ने न विवाह किया और न राज्य लेना ही स्वीकार किया। चित्राङ्गद एक युद्ध में मारा गया। विचित्रवीर्य्य भी थोड़ी ही अवस्था में मर गया। विचित्रवीर्य्य के दो रानियां थीं; एक का नाम अम्बा था और दूसरी का अम्बालिका। अम्बा के एक अन्धा पुत्र हुआ। उसका नाम धृतराष्ट्र पड़ा। अम्बालिका के एक पुत्र पाण्ड

नामक हुआ । धृतराष्ट्र अन्धा था इसलिए पाण्डु राजा हुआ । पाण्डु के दो रानियाँ थीं—कुन्ती और माद्री । कुन्ती के युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन तीन पुत्र हुए और माद्री के नकुल और सहदेव दो पुत्र हुए । धृतराष्ट्र की रानी का नाम गान्धारी था, उसके बहुत पुत्र हुए; उनमें दुर्योधन सबसे बड़ा था । पाण्डु के लड़के पाण्डव और धृतराष्ट्र के लड़के कौरव कहलाये ।

कौरवों और पाण्डवों को शस्त्र चलाना द्रोणाचार्य ने सिखलाया । जितने लड़के उनके पास पढ़ते थे सबमें भीम अधिक बलवान था । शस्त्र चलाना सबने साथ ही सीखा; परन्तु अर्जुन की बराबरी कोई नहीं कर सका । पाण्डवों की वीरता और बुद्धि को देख कर सब लोग चकित होते थे। उनके गुणों को देखते ही कौरव उनसे डाह करने लगे; परन्तु युधिष्ठिर सबसे बड़े थे इसलिए वही युवराज नियत किये गये। युधिष्ठिर के युवराज होने पर उन्हें और उनके भाइयों को दुर्योधन ने अपने पिता धृतराष्ट्र से कहला कर कुछ दिनों के लिए वारणावत को भेज दिया । वहाँ, दुर्योधन ने पाण्डवों के लिए लाख का एक घर बनवा रक्खा था और पुरोचन नाम के एक मनुष्य को कह रक्खा था कि जब वे इस घर में रहने आवें तब वह आग लगा दे जिसमें वे उसी में जल मरें। दुर्योधन के इस विश्वासघातक विचार का पता युधिष्ठिर को पहले ही से लग गया था इसलिए वे पाँचों भाई बच गये और पुरोचन आप ही उस घर में जल कर भस्म हो गया ।

इन लाख के घर में जलने से बच कर युधिष्ठिर इत्यादि पाँचों भाई अपनी माता कुन्ती के साथ बहुत दिनों तक इधर उधर घूमते रहे। इसी दशा में राजा द्रुपद की कन्या द्रौपदी को अर्जुन ने अपनी धनुर्विद्या के बल से स्वयंवर में जीता। तबसे द्रौपदी उन पाँचों भाइयों के साथ रहने लगी। द्रौपदी जब से उनको मिली तब से उसकी मान-मर्य्यादा विशेष बढ़ गई और वे लोग इन्द्रप्रस्थ को अपनी राजधानी बना कर वहाँ रहने लगे। धीरे धीरे वे इतने बली हो गये कि राजा युधिष्ठिर को राजसूय यज्ञ करने की इच्छा हुई। इसलिए उनके चारों भाइयों ने अनेक देशों को जीत कर बहुत सा धन इकट्ठा किया और युधिष्ठिर का राजसूय यज्ञ बिना विघ्न के समाप्त हुआ। इस यज्ञ में इस देश के और और राजाओं के सिवा अपने भाइयों के सहित दुर्योधन भी आया था।

पाण्डवों की बढ़ती दुर्योधन से सही नहीं गई। उसने युधिष्ठिर को अपने यहाँ जुआ खेलने के लिए बुलाया और कपट से उनका सारा राज्य जीत लिया। यहाँ तक कि बारह वर्ष तक खुल कर बन में रहने और एक वर्ष तक छिपे छिपे बन में अथवा और कहीं रहने के लिए उसने युधिष्ठिर के साथ दाँव लगाया। इसमें भी युधिष्ठिर ही की हार हुई और उनको अपना राज्य छोड़ कर अपने भाई, अपनी माता और द्रौपदी के साथ बन को जाना पड़ा। इस जुए में द्रौपदी को भी युधिष्ठिर हार गये थे।

इस हार के कारण दुर्योधन की आज्ञा से उसके भाई दुःशासन ने उसे सभा में नङ्गी करना चाहा। इस दुष्टता पर भीम को इतना क्रोध आया कि उसने दुःशासन का रुधिर पीने और जिस जाँघ पर दुर्योधन द्रौपदी को बिठाना चाहता था उसे अपनी गदा से चूर चूर कर डालने की प्रतिज्ञा की। इस प्रतिज्ञा को भीम ने पूरी भी कर दिखाया। जुआ खेलना बहुत ही बुरा है। जुआ खेलने ही के कारण पाण्डवों पर यह विपत्ति आई।

१३ वर्ष बीतने पर जब पाण्डव वन से लौटे और अपना राज्य माँगने लगे, तब दुर्योधन ने उनकी बात न मानी। उसने कहा—"राज्य की बात कौन कहे, एक सुई की नोक के बराबर भी भूमि मैं बिना युद्ध के न दूँगा।" तब लाचार होकर युधिष्ठिर को लड़ाई का सामान करना पड़ा। इस लड़ाई में कृष्ण अर्जुन के सारथि हुए। कौरवों ने बहुत सेना इकट्ठी की; पाण्डव उनके बराबर इकट्ठी नहीं कर सके। परन्तु पाण्डव स्वयं बड़े वीर थे और कृष्ण उनके सहायक थे, इसलिए अन्त में उन्हीं की जीत हुई; और धृतराष्ट्र के सारे लड़के लड़ाई में मारे गये। इस लड़ाई में अर्जुन के लड़के अभिमन्यु ने बड़ी वीरता दिखलाई। उसकी उमर बहुत ही थोड़ी थी; परन्तु उसने कौरवों के बड़े बड़े वीरों के दाँत खट्टे कर दिये और न जाने कितनी सेना को उसने मार गिराया। पीछे से उसे ७ वीरों ने मिल कर मारा। यह लड़ाई १८ दिन तक होती रही और धीरे धीरे दोनों ओर की सारी सेना कट गई। ऐसा भारी युद्ध भरतखण्ड में और दूसरा नहीं हुआ।

कहीं के कहीं पहुँच जाते। दूसरा प्रमाण ग्रहण का है। यह तो तुमने पढ़ा ही है कि पृथ्वी सूर्य्य के चारों ओर घूमती है। घूमते घूमते जब यह सूर्य्य और चन्द्रमा के बीच में आ जाती है तब उसकी छाया चन्द्रमा पर पड़ती है। छाया के पड़ने ही को ग्रहण कहते हैं। इस छाया को देखने से साफ़ जान पड़ता है कि पृथ्वी गोल है। तीसरा प्रमाण यह है कि समुद्र में दूर से जहाज़ जब किनारे की ओर आते हैं तब एक साथ ही वे पूरे नहीं दिखलाई देते। पहले उनका मस्तूल दिखलाई देता है, फिर कुछ देर में, उनके बीच का भाग दिखलाई देता है, और फिर कहीं उनके किनारे दिखलाई देते हैं। यदि पृथ्वी गोल न होती तो ऐसा न होता; उसके चिपटी होने से पूरा जहाज़ एकबारगी दिखलाई देने लगता है।

इस चित्र को देखने से तुम समझ जाओगे कि पृथ्वी के गोल होने ही के कारण किनारे की ओर आनेवाला जहाज़, पूरा का पूरा, एक ही साथ, नहीं दिखलाई देता। इसलिए और अधिक प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं है।

पृथ्वी का विस्तार ठीक ठीक ध्यान में आने के लिए पहले यह जान लेना उचित है कि वृत्त किसे कहते हैं। यदि किसी

इतनी बड़ी है कि यदि हम प्रति दिन बीस घंटे चलें तो उसकी परिधि की परिक्रमा करने के लिए हमको तीन वर्ष से भी अधिक चाहिए। और यदि पूरी पृथ्वी को हम देखना चाहें और प्रति दिन दस दस घंटे चल कर उसके ऊपर के सब स्थानों को देखें तो कम से कम ढाई सौ वर्ष चाहिएँ।

जितनी पृथ्वी है उसकी एक तिहाई थल और दो तिहाई जल है। इसी जल को समुद्र कहते हैं। समुद्र की गहराई का अभी तक ठीक ठीक पता नहीं लगा। दो द॰ हज़ार गज़ की लम्बी ज़ंजीरें डालने से भी ये नीचे तक नहीं पहुँचतीं। यदि सब समुद्र सूख जावें और सूख जाने पर जितनी नदियाँ इस समय उसमें गिरती हैं वे सब बीस हज़ार वर्ष तक उसमें बराबर गिरा करें तो कहीं वह फिर पहले के समान भर जावे।

पृथ्वी की गति दो प्रकार की है। एक का नाम दैनिक गति और दूसरी का नाम वार्षिक गति है। चौबीस घंटे में पृथ्वी एक बार अपनी कील पर घूम आती है। इस घूम जाने को दैनिक गति कहते हैं। दिन और रात इसी गति के कारण होते हैं। पृथ्वी का जो भाग सूर्य के सामने रहता है वहाँ दिन होता है और जो उसके सामने नहीं रहता वहाँ रात होती है। अपनी कील पर घूमती हुई पृथ्वी आगे को बढ़ती जाती है और ३६५ दिन ६ घंटे में सूर्य के चारों ओर घूम आती है। इस गति का नाम वार्षिक गति है। जाड़ा, और गरमी आदि ऋतु इसी गति के कारण होते हैं। सूर्य के चारों ओर घूमने में पृथ्वी

हैं। ऐसे तारों को उल्का कहते हैं। इनमें से कोई अधिक और कोई कम प्रकाशमान होते हैं। किसी किसी के पीछे प्रकाश की एक रेखा रहती है और गिरने के समय दूर तक जाती हुई दिखाई देती है। ऐसे तारे गिरते हुए तो दिखाई देते हैं, परन्तु पल भर में फिर उनका पता नहीं लगता कि ये कहाँ चले गये। ये और उनकी प्रकाशमान रेखा देखते देखते लोप हो जाती है।

तुमने ग्रह और उपग्रहों का वृत्तान्त सुना होगा। जितने ग्रह और उपग्रह होते हैं उनके अतिरिक्त अनेक उल्कायें आकाश में फिरा करती हैं। जिस प्रकार पृथ्वी के ऊपर मनुष्यों के पीछे जीना और मरना लगा है उसी प्रकार आकाश में ग्रह, उपग्रह और उल्काओं के पीछे भी उत्पत्ति और नाश लगा है। आकाश में नये नये ग्रह उत्पन्न हुआ करते हैं और पुराने ग्रह टुकड़े टुकड़े होकर नष्ट हो जाया करते हैं। वेस्टा, जूनो, सीरिस और पालस, ये चार ग्रह पहले एक थे; परन्तु किसी समय उस एक ग्रह के टूट कर ४ टुकड़े हो गये, वही अब इन चार नामों से प्रसिद्ध हैं। जो ग्रह टूट जाते हैं उनके असंख्य टुकड़े आकाश में सूर्य के चारों ओर ग्रहों के समान घूमा करते हैं। ये टुकड़े एक प्रकार के पत्थर हैं। जब पृथ्वी अपनी कक्षा पर घूमती हुई इन पत्थरों के पास पहुँचती है तब उसकी आकर्षण-शक्ति से ये पत्थर उसकी ओर खिंच आते हैं। और कभी कभी बड़े शब्द के साथ पृथ्वी पर गिरते हैं। इन्हीं के गिरने का नाम उल्का-पात है।

आकाश से अनेक उल्का-पात हुआ करते हैं। परन्तु सब

इनमें लोहा, ताँबा और कोयला इत्यादि धातु मिले रहते हैं। उल्काओं का रङ्ग सफ़ेद होता है। कभी कभी उनका रङ्ग पीला और हरापन लिये हुए भी देखा गया है।

आकाश में इतनी उल्कायें सूर्य्य की चारों ओर घूमा करती हैं कि उनकी गिनती नहीं हो सकती। कुछ उल्कायें ऐसी भी हैं जो चन्द्रमा के समान पृथ्वी की प्रदक्षिणा करती हैं। फ्रांस देश के एक ज्योतिषी ने पता लगाया है कि एक उल्का पृथ्वी से प्रायः ५००० मील की दूरी पर है। वह इतने वेग से चलती है कि एक दिन में छः सात बार पृथ्वी की प्रदक्षिणा कर जाती है!

८ अगस्त से १५ अगस्त तक और ६ नवम्बर से १६ नवम्बर तक अधिक उल्का-पात होता है। हर तैंतीसवें वर्ष उल्काओं की बहुत भारी वर्षा होती है। १८३३ ईसवी की बारहवीं नवम्बर को अमेरिका में अद्भुत उल्का-पात हुआ। रात को ६ बजे से ले कर प्रातःकाल तक अनगिनत उल्काओं की वर्षा आकाश से हुई। पहले इतना अधिक उल्का-पात हुआ कि किसी से उनकी गिनती न हो सकी। जब उनका गिरना कुछ कम हुआ तब बोस्टन नगर के एक ज्योतिषी ने हिसाब लगा कर देखा तो उसको विदित हुआ कि प्रति घंटा चालीस हज़ार उल्काओं की वर्षा हुई। १०९५ ईसवी की पचीसवीं अप्रैल को फ़्रान्स में भी बहुत उल्का-पात हुआ। जिस समय उनकी वर्षा हो रही थी उस समय यह जान पड़ता था कि पत्थर बरस रहे हैं। १८६६ ईसवी में लन्दन नगर में भी उल्काओं की बहुत अधिक वृष्टि हुई।

आरम्भ प्रथम घर से ही होता है, क्योंकि यहाँ पहले लड़कों का कर्तव्य माता-पिता की ओर और माता-पिता का कर्तव्य लड़कों की ओर देख पड़ता है। इसके अतिरिक्त पति-पत्नी, स्वामी-सेवक और स्त्री-पुरुष के भी परस्पर अनेक कर्तव्य हैं। घर के बाहर हम मित्रों, पड़ोसियों और राजा-प्रजाओं के परस्पर कर्तव्य को देखते हैं। इसलिए संसार में मनुष्य का जीवन कर्तव्यों से भरा पड़ा है, जिधर देखो उधर कर्तव्य ही कर्तव्य देख पड़ता है। बस, इसी कर्तव्य का पूरा पूरा पालन करना हम लोगों का परम धर्म है; और इसी से हम लोगों के चरित्र की शोभा बढ़ती है। कर्तव्य का करना न्याय पर निर्भर है और वह न्याय ऐसा है जिसे समझने पर हम लोग प्रेम के साथ कर सकते हैं।

हम सब लोगों के मन में एक ऐसी शक्ति है जो हम सभों को बुरे कामों के करने से रोकती और अच्छे कामों की ओर हम सभों की प्रवृत्ति को झुकाती है। यह बहुधा देखा गया है कि जब कोई मनुष्य खोटा काम करता है तो वह बिना किसी के कहे आप ही लजाता और अपने मन में दुखी होता है। लड़को! तुमने देखा होगा कि जब कभी कोई लड़का किसी मिठाई को चुरा कर खा लेता है तो वह मन में डरा करता है और पीछे से आप ही आप पछताता है कि मैंने ऐसा काम क्यों किया, मुझे अपनी माता से कह कर खाना था। इसी प्रकार एक दूसरा लड़का जो कभी कुछ चुरा कर नहीं खाता, सदा प्रसन्न रहता है और उसके मन में कभी किसी प्रकार का डर और पछतावा

नहीं होता। इसका क्या कारण है? यही कि हम लोगों का यह कर्तव्य है कि हम लोग चोरी न करें। परन्तु जब हम चोरी कर बैठते हैं तो हमारी आत्मा हमें कोसने लगती है। इसलिए हमारा यह धर्म है कि हमारी आत्मा जो हमें कहे उसके अनुसार हम करें। दृढ़ विश्वास रक्खो कि जब तुम्हारा मन किसी काम के करने से हिचकिचाये और दूर भागे तो कभी तुम उस काम को न करो। तुम्हें अपना धर्म-पालन करने में बहुधा कष्ट उठाना पड़ेगा, पर इससे तुम अपना साहस न छोड़ो। क्या हुआ जो तुम्हारे पड़ोसी ठग विद्या और असत्यपरता (बेईमानी) से धनाढ्य हो गये और तुम कंगाल ही रह गये। क्या हुआ जो दूसरे लोगों ने झूठी चाटुकारी (खशामद) करके बड़ी बड़ी नौकरियाँ पा लीं और तुम्हें कुछ न मिला, और क्या हुआ जो दूसरे नीच कर्म करके सुख भोगते हैं और तुम सदा कष्ट में रहते हो। तुम अपने कर्तव्य धर्म को कभी न छोड़ो और देखो इससे बढ़ कर संतोष और आदर क्या हो सकता है कि तुम अपने धर्म का पालन कर सकते हो।

हम लोगों का जीवन सदा अनेक कार्यों में व्यग्र रहता है। हम लोगों को सदा काम करते ही बीतता है। इसलिए हम लोगों को इस बात पर पूरा ध्यान रखना चाहिए कि हम लोग सदा अपने धर्म के अनुसार काम करें और कभी उसके पथ पर से न हटें, चाहे उसके करने में हमारे प्राण भी चले जायें तो कोई चिन्ता नहीं।

धर्म-पालन करने के मार्ग में सबसे अधिक बाधा चित्त की चञ्चलता, उद्देश की अस्थिरता और मन की निर्बलता से पड़ती है। मनुष्य के कर्तव्य-मार्ग में एक ओर तो आत्मा के भले और बुरे कामों का ज्ञान, और दूसरी ओर आलस्य और स्वार्थपरता रहती है। बस, मनुष्य इन्हीं दोनों के बीच में पड़ा रहता है और अन्त में यदि उसका मन पक्का हुआ तो वह आत्मा की आज्ञा मान कर अपने धर्म का पालन करता है और यदि उसका मन कुछ काल तक द्विविधा में पड़ा रहा तो स्वार्थपरता निश्चय उसे आ घेरेगी और उसका चरित्र घृणा के योग्य हो जायगा। इसलिए यह बहुत आवश्यक है कि आत्मा जिस बात के करने की प्रवृत्ति दे उसे बिना अपना स्वार्थ सोचे झटपट कर डालना चाहिए। ऐसा करते करते जब धर्म करने की बान पड़ जायगी तो फिर किसी बात का डर न रहेगा। देखो इस संसार में जितने बड़े बड़े लोग हो गये हैं, जिन्होंने कि संसार का उपकार किया है और उनसे फिर आदर और सत्कार पाया है, उन सभों ने अपने कर्तव्य को सबसे श्रेष्ठ माना है। क्योंकि जितने कर्म उन्होंने किये उन सभों में अपने कर्तव्य पर ध्यान देकर न्याय का बर्ताव किया। जिन जातियों में यह गुण पाया जाता है वे ही संसार में उन्नति करती हैं और संसार में उनका नाम आदर के साथ लिया जाता है। यह समझ सिर्फ अंग्रेज़ी जाति में है कि वह [illegible] समय में भी वह [illegible] हो गया उस पर बहुत से सिर्फ [illegible] उनके [illegible] का पूरा पूरा [illegible]

पर जब कोई उपाय सफल न हुआ तो जितनी स्त्रियां इस पर थीं सब नावों पर चढ़ा कर विदा कर दी गईं, और जितने मनुष्य उस पोत पर बच गये थे, उन्होंने उसकी छत पर इकट्ठे होकर ईश्वर को धन्यवाद दिया कि वे अब तक अपना कर्तव्य पालन कर सके और स्त्रियों की प्राण-रक्षा में सहायक हो सके। निदान इसी प्रकार ईश्वर की प्रार्थना करते करते उस पोत में पानी भर आया और वह डूब गया. पर वे लोग अपने स्थान पर ज्यों के त्यों खड़े रहे और उन्होंने अपने प्राण बचाने का कोई उद्योग न किया। इसका कारण यह था कि यदि वे अपने प्राण बचाने का उद्योग करते तो स्त्रियां और बच्चे न बच सकते इसलिए उस पोत के लोगों ने अपना धर्म यही समझा कि अपने प्राण देकर स्त्रियों और बच्चों के प्राण बचाने चाहिएं। इसी के विरुद्ध फ्रांस देश के रहनेवालों ने एक डूबते हुए जहाज पर से अपने प्राण तो बचाये, किन्तु उस पोत पर जितनी स्त्रियां और बच्चे थे उन सभों को उसी पर छोड़ दिया। इस नीच कर्म की सारे संसार में निन्दा हुई। इसी प्रकार जो लोग स्वार्थी होकर अपने कर्तव्य पर ध्यान नहीं देते, वे संसार में लज्जित होते हैं और सब लोग उनसे घृणा करते हैं।

कर्तव्य-पालन से और सत्यता से बड़ा घना सम्बन्ध है और जो मनुष्य अपना कर्तव्य पालन करता है वह अपने कामों और वचनों में सत्यता का बर्ताव भी रखता है। वह ठीक समय पर उचित रीति से अच्छे कामों को करता है। सत्यता

संसार में बहुत से ऐसे भी नीच और कुत्सित लोग होते हैं जो झूठ बोलने में अपनी चतुराई समझते हैं और सत्य को छिपा कर धोखा देने व झूठ बोल कर अपने को बचा लेने में ही अपना परम गौरव मानते हैं। ऐसे लोग ही समाज को नष्ट करके दुःख और संताप के फैलाने में मुख्य कारण होते हैं। इस प्रकार का झूठ बोलना स्पष्ट झूठ बोलने से अधिक निन्दित और कुत्सित कर्म है।

झूठ बोलना और भी कई रूपों में देख पड़ता है। जैसे चुप रहना, किसी बात को बढ़ा कर कहना, किसी बात को छिपाना, भेष बदलना, झूठ मूठ दूसरों के साथ हाँ में हाँ मिलाना, प्रतिज्ञा करके उसे पूरा न करना और सत्य को न बोलना इत्यादि जब कि ऐसा करना धर्म के विरुद्ध है, तब ये सब बातें झूठ बोलने से किसी प्रकार कम नहीं हैं। फिर ऐसे लोग भी होते हैं जो मुँह देखी बातें बनाया करते हैं, परन्तु करते वही काम हैं जो कि उन्हें रुचता है। ऐसे लोग मन में समझते हैं कि कैसा सबको मूर्ख बना कर हमने अपना काम कर लिया, पर वास्तव में वे अपने को ही मूर्ख बनाते हैं और अन्त में उनकी पोल खुल जाने पर समाज में सब लोग घृणा करते और उनसे बात करना अपना अपमान समझते हैं।

कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो अपने मन में किसी गुण के न रहने पर भी गुणवान् बनना चाहते हैं। जैसे यदि कोई पुरुष कविता करना न जानता हो, पर वह अपना ढंग ऐसा बनावे

रहे जिससे लोग समझें कि वह कविता करना जानता है, तो वह कविता का आडम्बर रखनेवाला मनुष्य झूठा है, और फिर वह अपने भेष का निर्वाह पूरी रीति से न कर सकने पर दुःख सहता है और अन्त में भेद खुल जाने पर सब लोगों की आँखों में झूठा और नीच गिना जाता है। परन्तु जो मनुष्य सत्य बोलता है वह आडम्बर से दूर भागता है और उसे दिखावा नहीं रुचता। उसे तो इसी में बड़ा सन्तोष और आनन्द होता है कि सत्यता के साथ वह अपना कर्तव्य-पालन कर सकता है।

इसलिए हम सब लोगों का यह परम धर्म है कि सत्य बोलने को सबसे श्रेष्ठ मानें और कभी झूठ न बोलें, चाहे उससे कितनी अधिक हानि क्यों न होती हो। सत्य बोलने ही से समाज में हमारा सम्मान हो सकेगा और हम आनन्दपूर्वक अपना समय बिता सकेंगे। क्योंकि सब कोई सच्चाई चाहते और झूठे से सभी घृणा करते हैं। यदि हम सदा सत्य बोलना अपना धर्म मानेंगे तो हमें अपने कर्तव्य के पालन करने में कुछ भी कष्ट न होगा और बिना किसी परिश्रम और कष्ट के हम अपने मन में सदा सन्तुष्ट और सुखी बने रहेंगे।

४२—आरम्भ

युवा पुरुषों को चाहिए कि संसार-क्षेत्र में प्रवेश करने के पहले वे अपने चित्त में सोचें कि हमारे जीवन का लक्ष्य क्या

ऐसे मनुष्य के लिए कि जिसने संसार-क्षेत्र में प्रवेश नहीं किया है, अपने जीवन भर के लिए एक लक्ष्य को स्थिर कर लेना कुछ सहज सी बात नहीं है। किन्तु यह लक्ष्य इतने काम का है कि इसके बिना संसार-क्षेत्र में प्रवेश करने पर मनुष्य पद पद पर चूकता और दुःख भोगता है। सैकड़ों मनुष्य अपने जीवन के लिए कोई लक्ष्य स्थिर न करके जो उन्हें सामने दिखाई पड़ता है उसी को लेकर वे संसार-क्षेत्र में प्रवेश करते हैं। कुछ दिनों के पीछे जब उन्हें वह मार्ग अच्छा नहीं लगता तब चट उसे छोड़ कर किसी दूसरे पर वे चलने लगते हैं। थोड़े दिनों पीछे उसे भी विकट पथ मान कर तीसरे पर चल निकलते हैं। यों ही वे बारंबार अपने जीवन के लक्ष्य को बदलते चले जाते हैं और लाभ के बदले हानि उठाते हैं। निदान इसी प्रकार की अदला बदली में उनके जीवन का सबसे अच्छा समय—यौवन-काल—भी बीत जाता है। अन्त में जब वे देखते हैं कि इसी उलट फेर में मेरी युवा अवस्था के बल, साहस और तेज भी नष्ट हो गये तब चट वे घबरा कर किसी एक पथ के पथिक बन जाते हैं और जहाँ तक बन पड़ता है चल कर कुछ दूर पहुँचते पहुँचते उन्हें बुढ़ापा आ घेरता है।

इसलिए बुद्धिमान् लोग चञ्चल चित्तवाले मनुष्यों के कामों की तुलना लड़कों के खेल के साथ करते हैं। जैसे बालक नित्य नये नये खिलौनों को देख कर पुरानों की चाह नहीं करते, बार बार जीवन के लक्ष्य को बदलनेवाले मनुष्य भी ठीक इसी प्रकार

वाले की बुद्धि की चमत्कारी और सहन-शीलता विदित हो जाती है। देखो जब हम लोग किसी हवेली को तोड़ा चाहते हैं तब जो मनुष्य उसकी पहली ईंट उखाड़ता है उसी को इस कार्य्य का प्रधान मनुष्य मानते हैं, क्योंकि पहली ईंट के उखाड़ने पर और ईंटों का उखाड़ लेना सहज हो जाता। इसी प्रकार छोटे छोटे कामों से आरम्भ करके बड़े बड़े काम भी हो जाते हैं; किन्तु पहले ही यदि कोई मनुष्य सौभाग्य के सबसे ऊँचे शिखर पर चढ़ने का उद्योग करे तो निश्चय है कि वह मुँह के बल गिरेगा और उसकी आशा कभी सफल न होगी। क्योंकि बिना नीचे की सीढ़ियों पर चढ़े ऊपर की सीढ़ियों पर कोई नहीं चढ़ सकता। अतएव ऐसा कौन व्यक्ति है कि जो पहले छोटे छोटे कामों के बिना किये एक बार ही बड़े कामों के करने में समर्थ हो।

कार्य्यमात्र ही उत्तम है। परन्तु यदि उसका करनेवाला साधु और सुचरित्र हो तो कोई काम भी नीच या अपमान देनेवाला नहीं हो सकता। और वह यदि असाधु या कुचरित्र हो तो चाहे कैसे ही भले काम को क्यों न आरम्भ करे पर तुरन्त ही इस काम को कलङ्कित करके आप भी अपमानित और लज्जित होता है। यही कारण है कि सामान्य कामों से भी बड़ों की बड़ाई और बड़े कामों से छोटों की छोटाई प्रकट हो जाती है, क्योंकि निज चरित्र से ही मनुष्य अपने किये कामों को बनाता या बिगाड़ता है।

पृथ्वी में सभी लोग बड़े हुआ चाहते हैं, किन्तु ऐसे कार्य्य

कोई विरले ही करते हैं। बस, इसी से ये सब कोई उन्नत नहीं हो सकते। अतएव भाई, जो तुम उन्नत हुआ चाहते हो तो संसार-क्षेत्र के द्वार पर खड़े ही कर विचारो कि तुम्हारा चित्त किस ओर झुकता है। बस उसी के अनुसार कोई लक्ष्य स्थिर करके तुम लगातार काम करते रहो। विश्राम, धैर्य और अपनी सारी शक्ति से उस काम के करने का यत्न करो। फिर तो तुम्हें आप ही उस कार्य्य की उन्नति देख कर आनन्द होगा, तुम सुखी होगे और सदा उस काम को बिना किये कभी चुपचाप न बैठ सकोगे। जब बहुतेरे लोग तुम्हें बहकावेंगे कि तुम इस कार्य्य के योग्य नहीं हो, किन्तु तुम उनके कहने पर कान न देकर अपने सिद्धान्त के अनुसार चले चलो और बराबर इस बात का स्मरण रक्खो कि चाहे कोई कैसा ही कठिन काम क्यों न हो परन्तु परिश्रम के साथ लगातार करने से एक न एक दिन वह सिद्ध हो ही जाता है। यदि कोई काम कठिन या दुष्कर्य्य हो तो भी अपनी कर्त्तव्यता और उसकी आवश्यकता पर ध्यान देकर तुम उसे ऐसे आदर और धैर्य से करो कि जिसमें उन्हें पूरा पूरा सुख मिले। बरन् अपने करने योग्य कार्य्यों के दुष्कर्य ही हों तो भी तुम उन्हें सुगमता से कर डालो। परन्तु इस विषय में तुम पूरे सावधान रहो कि अपनी उन्नति देख कर कहीं तुम अपने हृदय में अभिमान न आने दो और सदैव नम्रता और विनय दिखा के अपने कामों को करो। इस विषय में किसी विद्वान् का उपदेश है—

कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकते। सोचना चाहिए कि क्या इस विषय में हम लोग अपनी संतान को उचित रीति से शिक्षा देते हैं?

देखो जितने महात्मा अद्भुत तथा बड़े बड़े कामों को पूरा करके चिरस्मरणीय हो गये हैं, उनका समय कैसे बीतता था? इस रीति से कि वे समय को वृथा नष्ट नहीं करते थे, वरन् सदा उसका उचित बर्ताव करते थे। इसी से वे बहुत कुछ कर सके।

इस अभागे देश के युवा लोग अनेक शास्त्रों को पढ़ते हैं, विविध विषयों में उपदेश देते हैं. किन्तु वे समयरूपी धन का आदर करना नहीं जानते; वे सदैव सवेरे, दोपहर, सन्ध्या और रात को, तथा भोजन के पहले या पीछे, घर में या बाहर, वृथा ही समय को नष्ट किया करते हैं। वे मूढ़ दिन भर यों ही गवाँ-कर जब संध्या हुई तो लगे पछताने कि "हाय यह काम करना था सो न किया, बड़ी भूल हुई, इसमें तो ढील नहीं करनी थी, अच्छा कल देखा जायगा"। मानों उन्हें 'कल' दूसरा कोई काम ही नहीं है। इसी प्रकार न जाने कितने 'कल' आते और जाते हैं, पर उनकी 'कल' की प्रतिज्ञा कभी पूर्ण नहीं होती।

"आगामि कल" यह शब्द बड़ा ही भयानक है। क्योंकि इन दो शब्दों के भीतर कितने ही पाप, प्रतिज्ञा-भङ्ग, निराशाएँ, कामों में ढील और जीवन की इतनी हानियाँ छिपी हैं कि जिन्हें

शोच कर चकित होना पड़ता है। किसी बुद्धिमान् ने कहा है कि—

"आगामि कल" यह शब्द केवल मूर्ख और अज्ञ लोगों ही के कोश में लिखा है। सच है ज्ञानी मनुष्य "आगामि कल" किसे कहते हैं यह जानते ही नहीं, क्योंकि यह शब्द अभी तक उनके व्यवहार में नहीं आया है। वे तो बीते हुए "कल" और "आज" इन्हीं दोनों शब्दों को भली भांति जानते हैं। इस कारण जो दिन कि उनके हाथ से निकल गया और उसका उत्तम रीति से उनसे बर्ताव नहीं हुआ है, उस पर वे और बातें प्रतिज्ञा-पूर्वक "आज" अर्थात् वर्तमान समय को अच्छे कार्यों में लगा कर दूने उत्साह और साहस के साथ कार्य को आरम्भ करते हैं और जो समय बीत गया है उसके लिए अधिक चिन्ता न कर आगे ऐसा न हो इसके लिए पक्का विचार करते हैं।

ऐसे भी बहुतेरे लोग हैं कि जो काम वे नहीं कर सकते या जो उनके हाथ से निकल गया या बीत गया है, उसके पछतावे में अपने बहुत से समय को नष्ट कर डालते हैं। और यह नहीं सोचते कि [illegible]

[illegible]

को सावधान होना चाहिए। किन्तु जो ऐसा नहीं करते वे अपने हाथ से निज उन्नति के द्वार को बन्द करते हैं। क्योंकि समय मनुष्य-मात्र की साधारण सम्पत्ति है। करुणामय परमेश्वर ने अपने किसी संतान को इस धन से वञ्चित नहीं किया है। इसलिए जो बुद्धिमान् अपनी इस पैतृक संपत्ति का सद्व्यवहार करते हैं, वे शीघ्र ही उन्नत हो मनुष्य-जीवन के सच्चे सुख के भोगने में समर्थ होते हैं, और जो बुद्धि से हीन हैं वे महा नीच दशा को पहुँच कर अपने जीवन को ऊसर भूमि सा कर डालते हैं। बस मनुष्यों में जितने प्रकार के घोर पाप, अँधेरी रात के जितने दुष्कर्म और भयानक कार्य्य हैं, वे सब इन्हीं दुराचारियों का आश्रय लेते हैं। किन्तु समय का अच्छा व्यवहार करनेवाले लोग मनुष्य-मात्र के लिए असंख्य उपकार कर गये हैं। महात्मा और भाग्यवान् लोगों की भी यही कथा है। क्योंकि प्रधान प्रधान ग्रन्थकार, आविष्कारक, विज्ञानविद्, पंडित, अध्यापक, देशहितैषी, परोपकारी, धार्मिक, सीधे, शान्त और सच्चरित्र, आदि महानुभाव लोग इसी श्रेणी में हुए और होते हैं और यही पृथ्वी के भूषण भी हैं। यदि ये न जन्म लेते तो क्या पृथ्वी ऐसी सुन्दर होती? कभी नहीं। बस, इन्हीं को सभ्य और शिक्षित मण्डली धन्यवाद देती है, इन्हीं की पूजा करती है, इन्हीं का सम्मान करती है, इन्हीं का विश्वास करती है और इन्हीं के दिखाये हुए पथ पर चल कर उन्नति प्राप्त करती है। संसार में जितने बड़े बड़े कार्य और जितनी सुख-समृद्धियाँ दिखाई देती

हैं ये सभी महानुभावों के हाथ और मस्तिष्क से उत्पन्न हुई हैं। अतएव वही यथार्थ में मनुष्य-जाति के गौरव हैं और उन्हीं का जीवन धन्य है।

इसी से कहते हैं कि भाइयो! आलस्य में पड़े पड़े व्यर्थ अपने दिन न बिताओ। जब तुम प्रत्येक घड़ी और पल को अपने सद्-व्यवहार में लाओ, तब देखोगे कि हमारे हाथ पाँव किस प्रकार काम करने में समर्थ होते हैं, हमारा मन कैसा चिन्ता-शील हो जाता है और हमारा जीवन कैसा सुखद होता है। अतएव घड़ी पल के अति तुच्छ वस्तु होने पर भी तुम इन्हें तुच्छ न समझो, क्योंकि छोटी छोटी वस्तुओं ही से बड़ी बड़ी वस्तुएँ बनती हैं। और छोटी वस्तुओं के बर्ताव के सीखने से ही बड़ी वस्तुओं का अभ्यास आपही हो जाता है। इसी लिए ज्ञानियों ने प्रत्येक पल को सद्-व्यवहार में लाने की आज्ञा दी है।

यह बात नहीं है कि कंजूस लोग ही अधिक धन उपार्जन करते हैं वरन् यह बात ठीक है कि एक और जैसे वे धन का उपार्जन कर सकते हैं, दूसरी ओर वैसे ही प्राप्त रहते उसका अपव्यय नहीं करते। इसी से वे शीघ्र ही धनवान् हो जाते हैं। बस कन्जूस लोगों की तरह जो मनुष्य अपने समय-रूपी धन में से एक पल-मात्र का भी अपव्यय नहीं करता, अर्थात् शारी-रिक, मानसिक या आध्यात्मिक किसी प्रकार की उन्नति किये बिना नहीं रहता वह अपनी उन्नति देख कर आपही आश्च-र्यित होता है। यही कारण है कि समय के सद्-व्यवहार ही से

सामान्य से सामान्य लोग भी संसार में बड़े बड़े काम कर ग
हैं। क्योंकि समय के लिए कुछ भी असाध्य नहीं है। अतए
इसके ऐसा अनमोल पदार्थ दूसरा नहीं है। एक बार खो जाने प
फिर धन, मान, बल, पराक्रम आदि किसी वस्तु से भी यह
प्राप्त नहीं हो सकता। उन मूर्खों से बढ़ कर और कौन ऐस
हिये का अंधा है जो सबसे अधिक समय को नष्ट करता है
देखो चारों ओर जितने दुष्कर्म, दुराचार, दुःख-दारिद्रय
इत्यादि दीखते हैं वे सभी समय के असद्-व्यवहार के
फल हैं।

समय का जैसा व्यवहार किया जाता है, फल भी वैसा ही
होता है। वे बड़े ही मूर्ख हैं जो ऐसे अमूल्य समय को दुखदाई
जान कर "क्यों कर यह शीघ्र बीते" ऐसा कह कर अपने लिए
खेद, पश्चात्ताप और नरक का द्वार खोल देते हैं। किन्तु
बुद्धिमान् लोग बड़े उमंग से इसे आदर-पूर्वक आलिंगन कर
और इसके सद्-व्यवहार से सांसारिक उन्नति करके अपने
मनुष्य-जन्म को सफल करते हैं।

चाहे कोई कितना ही समय का सद्-व्यवहार क्यों न करे,
किन्तु नियमानुसार समय का विभाग करके काम में प्रवृत्त हुए
बिना कोई भी काम उत्तम रीति से नहीं हो सकता। क्योंकि
प्रत्येक काम के लिए स्वतंत्र समय होना चाहिए। बस, जिस
समय के लिए जो काम नियत है, उसे उसी काल में करना
उचित है; इसलिए ऐसे नियम की अवश्य दृढ़ता होनी चाहिए।

यदि ऐसा न किया जाय तो आज के काम को कल के लिए डाल रखने से मनुष्य के ऊपर अधिक बोझ पड़ता है, क्योंकि फिर कल के काम को परसों पर डालना पड़ेगा और यों ही प्रति दिन के कामों का बोझ बढ़ता ही जायगा। इसी लिए बुद्धिमान् लोग अपने दिन रात के कामों के समय की अवधि बाँध कर उन्हीं उन्हीं समयों में वे वे काम करते हैं। ऐसा संकल्प करने से शान्तभाव से सब काम ठीक समय पर सुगमता से होते जाते हैं।

जो लोग ऐसा नियम बाँध कर ठीक समय पर काम करते हैं, उन्हें किसी काम के लिए घबराहट नहीं होती और न थका-वट ही होती है। ऐसे मनुष्य वर्ष-गणना में अल्पायु होने पर भी कार्य गणना में दीर्घायु से प्रतीत होते हैं। सामान्य मनुष्य जिस काम को अठवारे में नहीं कर सकता, अध्यवसायी पुरुष उसे चटपट दो ही एक दिन में कर डालते और अपने बीते हुए समय की ओर देख कर प्रसन्न होते हैं, तथा दूने उत्साह के साथ वर्तमान समय की कमी को पूरा करते हैं। समय के नष्ट होने का अनुताप उनके हृदय को स्पर्श तक नहीं करता। जीवन के साथ युद्ध करने के लिए सुसज्जित युवक जिन जिन नियमों को अवलम्बन करके समय के सद्-व्यवहार करने पर सफल-मनोरथ हो सकते हैं, इस विषय में एक उदार-हृदय महात्मा ने नीचे लिखी प्रणाली के अनुसार काम करने की आज्ञा दी है—

(१) बहुत से कामों को एक साथ करने का सहज उपाय है कि एक एक बार एक ही एक काम को करो।

(२) जो काम तुरन्त पूरा करने योग्य है उसे उसी समय कर डालो।

(३) जिस काम को आज करना है उसे कल के लिए न डाल रक्खो।

(४) जो काम अपने किये होता हो, उसे दूसरे के भरोसे पर न छोड़ो।

(५) घबराहट से जितनी जल्दी काम पूरा किया चाहोगे, उतना ही उसमें विलम्ब होगा।

(६) यदि शीघ्र काम पूरा किया चाहते हो तो उसे धीरज से करो।

वे लोग कैसे सुखी हैं जो सदैव अच्छे कामों में अपने दिन बिताते हैं। अहा! जिस समय दुःखी और दीन हीन लोगों के दुःख दूर करने के लिए यत्न करते हैं, जिस समय वे मूर्खों को उपदेश देकर उनके अन्धकारमय हृदय में प्रकाश का विकाश करते हैं, जिस समय वे पापियों को उपदेश देकर उन्हें सत्पथ पर लाते हैं, जिस समय वे देश के हितकारी कामों को करते हैं, जिस समय वे रोगियों की सेवा-टहल करते हैं, जिस समय वे नीतिमय पुस्तकों का पाठ कर अमृत पीने के समान सुख प्राप्त करते हैं, जिस समय वे ज्ञानी और धर्मात्मा बन्धुओं के साथ शास्त्रों की चर्चा करते हैं, और जिस समय वे करुणामय

जगदीश्वर के ध्यान में निमग्न होकर उसकी पूजा करते हैं, उस समय उनके आनन्द की सीमा ही नहीं रहती। और उस समय वे समझते हैं कि परमेश्वर ने बड़ी कृपा करके ये समय-रूपी अमूल्य रत्न हम लोगों के सुख-साधन के लिए दिये हैं। अतएव उन्हीं लोगों का मनुष्य-जन्म सफल है जो कि समय को अपने सद्-व्यवहार में लाकर उसे सार्थक करते हैं।

परन्तु हा! वे लोग कैसे मूर्ख और कैसे मतिमंद हैं, जो कि ऐसे अमूल्य रत्न को व्यर्थ लुटा कर आप बड़े बड़े दुःख-जाल में फँसते और अपने को नष्ट करते हैं। संसार में ऐसे लोगों का जीवन केवल दुःखमय और व्यर्थ है।

पद्यभाग

१—वृंदविनोद सतसई

मान होत है गुनन ते, गुन बिन मान न होय।
सुक सारी राखैं सबै, काग न राखै कोय ॥१॥

बुरे लगत सिख के बचन, हिये विचारो आप।
कड़ुवी भेषज बिन पिये, मिटे न तन की ताप ॥२॥

रहे समीप बड़ेन के, होत बड़ो हित मेल।
सबही जानत बढ़त है, बृच्छ बराबर बेल ॥३॥

हितहू की कहिये न तिहि, जो नर होय अबोध।
ज्यों नकटे को आरसी, होत दिखाये क्रोध ॥४॥

ओछे नर की प्रीति की, दीन्हीं रीति बताय।
जैसे छीलर ताल जल, घटत घटत घट जाय ॥५॥

जिहिं प्रसंग दूषन लगै, तजिये ताको साथ।
मदिरा मानत है जगत, दूध कलाली हाथ ॥६॥

जाके सँग दूषन दुरैं, करिये तिहिं पहिचानि।
जैसे मानै दूध सब, सुरा अहीरी पानि ॥७॥

करै बुराई सुख चहै, कैसे पावै कोय।
रोपै बिरवा आक को, आम कहाँ ते होय ॥८॥

दोष-भरी न उचारिये, जदपि जथारथ बात ।
कहै अंध को आँधरो, मानि बुरो सतरात ॥९॥
नर संपति दिन पाइ के, अति मति करिये कोय ।
दुर्योधन अति मान ते, भयो निधन कुल खोय ॥१०॥

२—रहीम के दोहे

जे गरीब पर हित करैं, ते "रहीम" बड़ लोग ।
कहा सुदामा बापुरो, कृष्ण मिताई जोग ॥१॥
यों "रहीम" यश होत है, उपकारी के अंग ।
बाँटन वाले के लगे, ज्यों मिंहदी को रंग ॥२॥
खीरा सिर से काटिये, मरिये नमक बनाय ।
"रहिमन" करुए मुखन को, चहियत यही सजाय ॥३॥
संपति संपति जानि के, सबको सब कोइ देय ।
दीनबंधु बिन दीन की, को "रहीम" सुधि लेय ॥४॥
अमी पियावत मान बिन, "रहिमन" हमें न सुहाय ।
प्रेम सहित मरिबो भलो, जो विष देय बुलाय ॥५॥
जो "रहीम" ओछो बढ़े, तो अति ही इतराय ।
प्यादा से फर्ज़ी भयो, टेढ़ो टेढ़ो जाय ॥६॥
"रहिमन" यों सुख होत है, बढ़त देख निज गोत ।
—[illegible] अँखियाँ निरखि, आँखिन को सुख होत । ७ ।

बड़े दीन को दुख सुने, लेत दया उर आनि।
हरि हाथी सों कब हुती, कहु "रहीम" पहिचानि ॥८॥

राम न जाते हरिन संग, सीय न रावण साथ।
जो "रहीम" भावी कतहुँ, होति आपने हाथ ॥९॥

"रहिमन" पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती मानुष चून ॥१०॥

"रहिमन" रहिबो या भलो, जौ लौं शील समूच।
शील ढील जब देखिए, तुरत कीजिए कूच ॥११॥

मथत मथत माखन रहै, दही मही बिलगाय।
"रहिमन" सोई मीत है, भीर परे ठहराय ॥१२॥

"रहिमन" याचकता गहे, बड़े छोट ह्वै जात।
नारायणहूँ को भयो, बावन आँगुर गात ॥१३॥

जो "रहीम" उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चन्दन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग ॥१४॥

८—दुष्ट मनुष्यों के लक्षण

(रामायण से)

दुष्ट मनुष्यों के लक्षण ।

तिन कर संग सदा दुखदाई ।
जिमि कपिलहि घालै हरहाई ॥

खलन हृदय अति ताप विशेषी ।
जरहिं सदा परसंपति देखी ॥

जहँ कहुँ निन्दा सुनहिं पराई ।
हरषहिं मनहुँ परी निधि पाई ॥

बैर अकारन सब काहू सों ।
जो कर हित अनहित ताहू सों ॥

झूठै लेना झूठै देना ।
झूठै भोजन झूठ चबेना ॥

बोलहिं मधुर बचन जिमि मोरा ।
खावैं महा अहि हृदय कठोरा ॥

लोभै ओढ़न लोभै डासन ।
शिश्नोदर पर यमपुर त्रास न ॥

काहू की जो सुनहिं बड़ाई ।
स्वांस लेहिं जनु जूड़ी आई ॥

जब काहू की देखैं विपती ।
सुखी होहिं मानहुँ जगनृपती ॥

मातु पिता गुरु द्विज न मानहिं ।
आपु गये अरु घालहिं आनहिं ॥

६—श्रीरामचन्द्र का लक्ष्मण को समझान

[रामायण से]

मातु पिता गुरु स्वामि सिख, सिर धरि करहिं सुभाय
लहेउ लाभ तिन जन्म के, नतरु जन्म जग जाय

अस जिय जानि सुनहुँ सिख भाई।
करौ मातु-पितु पद सेवकाई॥

भवन भरत रिपुसूदन नाहीं।
राउ वृद्ध मम दुख मन माहीं॥

मैं बन जाउँ तुम्हें लै साथा।
होइहि सब विधि अवध अनाथा॥

गुरु पितु मातु प्रजा परिवारू।
सब कहँ परै दुसह दुख भारू॥

रहहु करहु सब कर परितोषू।
नतरु तात होइहि बड़ दोषू॥

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी।
सो नृप अवश्य नरक अधिकारी॥

रहहु तात अस नीति विचारी।
सुनत लखन भये व्याकुल भारी॥

———

७—मारीच-वध

(रामायण से)

तेहि वन निकट दशानन गयऊ।
तब मारीच कपट मृग भयऊ॥

अति विचित्र कछु बरनि न जाई।
कनकदेह मनि रचित बनाई॥

सीता परम रुचिर मृग देखा।
अंग अंग सुमनोहर वेषा॥

सुनहु देव रघुवीर कृपाला।
यहि मृग कर अति सुन्दर छाला॥

सत्यसंध प्रभु वध कर यही।
आनहु चर्म कहा वैदेही॥

मृग विलोकि कटि परिकर बाँधा।
करतल चाप रुचिर शर साधा॥

प्रभुहिं विलोकि चला मृग भाजी।
धाये राम शरासन साजी॥

कबहुँ निकट पुनि दूर पराई।
कबहुँ प्रगटै कबहुँ छिपाई॥

प्रगटत दुरत करत छल भूरी।
यहि विधि प्रभुहिं गयउ लै दूरी॥

तब तकि राम कठिन शर मारा ।
धरनि परेउ करि घोर चिकारा ॥
लछिमन कै प्रथमहि लै नामा ।
पाछे सुमिरेसि मन महँ रामा ॥
प्राण तजत प्रगटेसि निज देहा ।
सुमिरेसि राम समेत सनेहा ॥
अंतर प्रेम तासु पहिचाना ।
मुनि दुर्लभ गति दीन्ह सुजाना ॥

८—वशिष्ठजी का भरतजी को उपदेश

[रामायण से]

कहहु तात केहि भाँति कोउ, करहि बड़ाई तासु ।
राम लषन तुम शत्रुहन, सरिस सुअन शुचि जासु ॥
सब प्रकार भूपति बड़ भागी ।
बाद बिषाद करिय तेहि लागी ॥
यह सुनि समुझि शोक परिहरहू ।
सिर धरि राज रजायसु करहू ॥
राउ राजपद तुम कहँ दीन्हा ।
पिता-वचन फुर चाहिय कीन्हा ॥
तजे राम जेहि वचन हुँ लागी ।
तनु परिहरेउ राम बिरहागी ॥

कौशल्यादि सकल महतारी ।
तेऊ प्रजा सुख होहिं सुखारी ॥
परम तुम्हार राम कर जानहि ।
सो सब विधि तुम सन भल मानहिं ॥
सौंपेहु राज राम के आये ।
सेवा करेहु सनेह सुहाये ॥

६—भरतजी का भाई पर प्रेम

[रामायण से]

मोहिं उपदेश दीन्ह गुरु नीका ।
प्रजा सचिव सम्मत सबही का ॥
मातु उचित पुनि आयसु दीन्हा ।
अवसि सीस धरि चाहिय कीन्हा ॥
गुरु पितु मातु स्वामि हित बानी ।
सुनि मन मुदित करिय भल जानी ॥
तुम तो देहु सरल सिख सोई ।
जो आचरत मोर हित होई ॥
जद्यपि यह समुझत हौं नीके ।
तदपि होत परितोष न जी के ॥
[illegible] ।

उतर देउँ केहि विधि केहि केही।
कहहु सुखेन यथारुचि जेही॥

मोहि कुमातु समेत बिहाई।
कहहु कहहिं को कीन भलाई॥

मोहिं बिनु को सचराचर माहीं।
जेहिं सियराम प्राण-प्रिय नाहीं॥

परम हानि सब कहँ बड़ लाहू।
अदिन मोर नहिँ दूषण काहू॥

संशय शील प्रेम वश अहहू।
सबै उचित सब जो कुछ कहहू॥

परिहरि राम सीय जग माहीं।
कोउ न कहहिं मोर मत नाहीं॥

सो मैं सुनब सहब सुख मानी।
अंतहु कीच तहाँ जहँ पानी॥

डर न मोहिं जग कहहि कि पोचू।
परलोकहु कर नाहिं न सोचू॥

एकै यहि उर दुसह दँवारी।
मोहिं लगि भये सिय-राम दुखारी॥

जीवन लाहु लखन भल पाया।
सब तजि रामचरन मन लाया॥

मोर जन्म रघुवर वन लागी।
झूठ काह पछिताउँ अभागी॥

आपन दारुण दीनता, सबहिं कहेउ समुझाय।
देखे बिन रघुबीर पद, जिय की जरन न जाय॥

आन उपाय मोहि नहिं सूझा।
को जिय की रघुबर बिनु बूझा॥
एकै आंक इहै मन माहीं।
प्रातकाल चलिहौं प्रभु पाहीं॥
यद्यपि मैं अनभल अपराधी।
मोहिं कारन भइ सकल उपाधी॥
तदपि शरन सन्मुख मोहि देखी।
छमि सब करिहहिं कृपा विशेषी॥
अरिहुँक अनभल कीन्ह न रामा।
मैं शिशु सेवक यद्यपि वामा॥
तुम पै पांच मोर भल मानी।
आयसु आशिष देहु सुबानी॥
जेहि सुनि विनय मोहिं जन जानी।
आवहिं बहुरि राम रजधानी॥

यदपि जन्म कुमातु तें, मैं सठ सदा सदोस।
आपन जानि न त्यागिहैं, मोहिं रघुबीर भरोस॥